फरवरी-2015 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 9 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

फरवरी-२०१५

खुशबू की पहचान है फूल,
माँ धरती की शान है फूल।
मिलकर रहना ये सिखलाते,
भेद-भाव न ये दिखलाते।
ऐसा ही हो जीवन अपना,
'वसुधैव कुटुम्बकम' लक्ष्य हो अपना।
सत्यार्थ प्रकाश महनीय ग्रन्थ में,
ऋषि दयानन्द यही बताते।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ३८

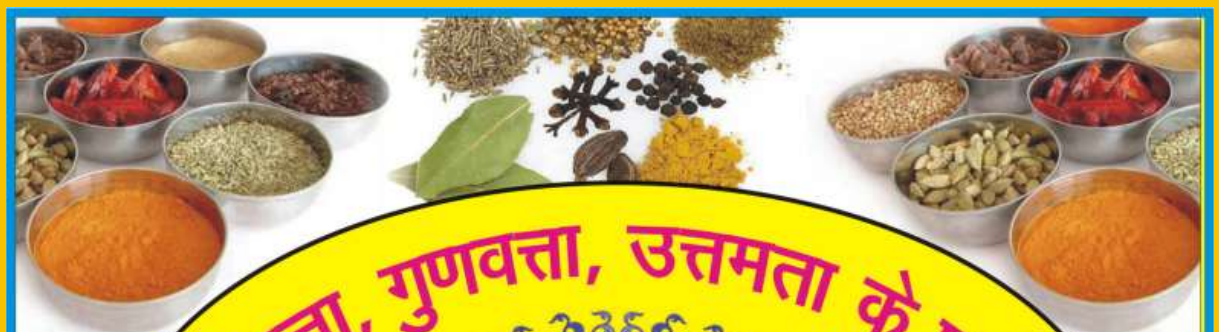

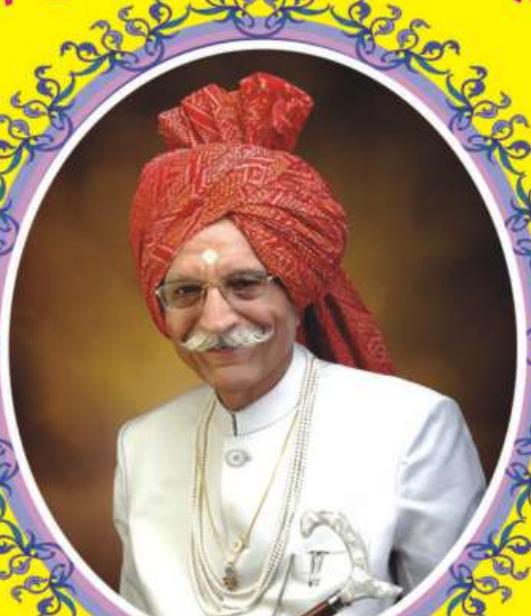

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
फाल्गुन कृष्ण तृतीया
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

स्वराज्य और महर्षि दयानन्द

February- 2015

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २४-२५
हलचल २६

०४	वेद सुधा
१०	वेद और वृष्टि विज्ञान
१३	सत्यार्थप्रकाश पहेली-१३
१४	नारी सुरक्षा
१५	कथा सरित
१६	भारत वर्ष आर्यों की मूल भूमि है
२१	स्वामी दयानन्द सर्वप्रथम हैं।
२३	प्रचार का चक्कर
२७	फलित ज्योतिष......
२८	विश्व विजयी शंखनाद है
२९	आश्रम व्यवस्था में समग्र सुख
३०	छत्रपति शिवाजी

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - ९

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

अन्नदाता से प्रार्थना

ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

उपर्युक्त मंत्र यजुर्वेद के ११ वें अध्याय का तिरासीवाँ मंत्र है। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने यजुर्वेद भाष्य में इस मंत्र के शब्दार्थ इस प्रकार करते हैं- अन्नपते-औषधि अन्नों के पालन करने हारे यजमान वा पुरोहित, अन्नस्य-अन्न को, नो-(नः) हमारे, देहि-दीजिए, अनमीवस्य-रोगों के नाश से सुख को बढ़ाने, शुष्मिण-बहुत बलकारी (बल बढ़ाने वाला), प्र प्र-अति प्रकर्ष के साथ (खूब), दातारम्-देने हारे को(दानशील पुरुष को देने वाले को), तारिष- तृप्त कर, (खूब तृप्त कर उसे भरा पूरा सन्तुष्ट रखिए), ऊर्ज-पराक्रम को (बल को), नो (नः) -हमारे, धेहि-धारण कर, द्विपदे- दो पग वाले मनुष्य आदि, चतुष्पदे- चार पग वाले गौ आदि पशुओं के लिए।

भावार्थ- मनुष्यों को चाहिए कि सदैव बलकारी आरोग्य अन्न आप सेवें और दूसरों को देवें। मनुष्य तथा पशुओं के सुख और बल बढ़ावें, जिससे ईश्वर की सृष्टि क्रमानुकूल आचरण से सब सुखों की सदा उन्नति होवे।

उपर्युक्त भावार्थ भौतिक दृष्टि से किया गया है। 'अन्नपते' का आध्यात्मिक अर्थ अन्न प्रदान करने वाले परमात्मा है।

भोजभोजन करने से पहले इस मंत्र का उच्चारण करते हुए हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे अन्नपते परमात्मन्! इस संसार के प्राणी आपका दिया हुआ अन्न खाते हैं। हम स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले अन्न का सेवन करें, जो रोगों के कीटाणुओं से रहित हो, शुद्ध और बलवर्धक हो। हे प्रभो! आप अन्नदान करने वाले मनुष्यों को सुखी और समृद्ध बनाइये तथा दो पैर और चार पैर वाले प्राणियों के लिए आपका दिया हुआ अन्न सुखदायी हो।

पाठकवृन्द! ईश्वर विश्वासी व्यक्ति भोजन ग्रहण करने से पहले परमात्मा को धन्यवाद करता है। वह भली भाँति जानता है कि परमेश्वर की कृपा से ही उसे खाने लिए अन्न प्राप्त हुआ। अन्न के स्वामी परमात्मा ही हैं। प्रभु ने ही तरह तरह के अनाज, फल-फूल, औषधि-वनस्पति आदि खाद्य पदार्थ उत्पन्न किए हैं, खट्टा मीठा, कड़वा-कसैला, तीखा चरपरा रस युक्त अन्न प्रदान किया है। उस परमेश्वर ने अनाजों और फलों को रोगों के कीटाणुओं से बचाने के लिए उन्हें तरह तरह के छिलकों से ढक रखा है।

प्रस्तुत मंत्र में अन्नपते परमात्मन् से प्रार्थना की गई प्रप्रदातारंतारिष-अन्न दान करने वाले दानशील पुरुषों का भंडार खूब भरा पूरा हो। वे सुखी, समृद्ध और सन्तुष्ट रहें।

फिर मंत्र ने आगे कहा- ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे- दो पैर और चार पैर वाले प्राणियों को शक्ति से भरपूर अन्न प्राप्त हो अर्थात् मनुष्य और पशु जो अन्न का सेवन करें, वह रोगनाशक और बलवर्धक हो। इस मंत्र में तीन बातों पर विशेष बल दिया गया है- पहली बात है कि हम अन्नपते परमात्मन् के प्रति कृतज्ञ हों।

दूसरी बात, हम उन दानशील पुरुषों के सुख को भी प्रार्थना करते हैं, जो अन्न दान करते हैं।

तीसरी बात हमारा अन्न रोगरहित और बलवर्धक हो। चलें एक एक पर विचार करें।

हमारे धर्म में दान की खूब महिमा गाई गई है। जो दान सात्विक होता है, वही दान अच्छा माना जाता है। सात्विक दान का लक्षण बताते हुए श्रीमद्भागवद्गीता कहती है- देशे काले च पात्रे तद्दानं सात्विकं स्मृतम्- अर्थात्, देशकाल और उचित आदमी को देखकर जो दान दिया जाता है, वही सात्विक दान होता है।

कई देशों में अकाल पड़ जाता है। भोजन के बिना बहुत से लोग मौत के मुँह में चले जाते हैं। भुखमरी से बचाने के लिए ऐसे देशों को अन्नदान करके धर्म का काम किया जाता है। यह सात्विक दान होता है। फिर गीता कहती है- जो दान समय को

देखकर दिया जाता है वह सात्विक कहलाता है, जैसे तूफान के समय या अतिवृष्टि के समय बाढ़ आदि के आ जाने से अन्न का अभाव हो जाता है, अन्न की कमी के कारण ऐसे समय में कई लोग अपनी जान गवाँ बैठते हैं। ऐसे समय में जो दाता अन्न-दान करता है, वह पुण्य का भागी बनता है।

फिर गीता का वचन है कि सात्विक दान वह है, जो पात्र को देखकर दिया जाता है। जिसका पेट भरा हो, जो अन्न लेकर फेंक दे, वह अन्नदान पाने का अधिकारी नहीं। अन्न को संस्कृत में देवता कहा जाता है क्योंकि वह शरीर को शक्ति देता है। इसलिए अन्न का सम्मान करना चाहिए। उन्हें बताना चाहिए कि अन्न 'अन्नपते-परमात्मा' का दिया हुआ वरदान है। संसार में बहुत से लोग अन्न के अभाव में दुखी हैं। कई देशों में अन्न के न मिलने से लोग भूख के मारे तड़प-तड़पकर प्राण त्याग रहे हैं। अन्नदाता परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। साथ ही उन दाताओं की सुख-समृद्धि के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए जो जरूरतमन्दों को अन्नदान करते हैं।

अन्न के सबसे बड़े दाता किसान होते हैं। वे अपना पसीना बहाकर खेतों में अन्न पैदा करते हैं। उनके घोर परिश्रम के कारण धरती माता उन्हें लाखों प्राणियों के लिए अन्न देती है। वे एक मन अन्न तो स्वयं खाते हैं और लाखों मन बाजारों में भेजकर अनगिनत लोगों का पेट भरते हैं। कल्पना कीजिए कि यदि किसान खेती न करते तो दुनिया का क्या हाल होता। इसलिए यजुर्वेद का यह मंत्र कह रहा है कि अन्न दाताओं का भंडार भरा रहे। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि अन्न उत्पन्न करने वाले किसानों की परमात्मा रक्षा करे। उनके लिए धरती उपजाऊ बने, इन्द्र देवता समय पर बरसकर उनके खेतों को हरा-भरा करे। सूरज अपने उचित ताप से उनके अन्नों को पकाये। चाँद अपनी चाँदनी बिखेर कर उनके अनाजों में रस भरे, ताकि प्राणीमात्र को सुखदायक और स्वास्थ्यवर्धक अन्न प्राप्त हो सके। हम अपने गाढ़े पसीने की कमाई से अन्न खरीद कर कुछ दीन-हीन जनों को दान करें। ऐसा करने से हमारी भी समृद्धि बढ़ेगी।

यजुर्वेद के इस मंत्र में तीसरी बात कही गई- देह्यनमीवस्य शुष्मिणः अर्थात् बिना रोग वाले बलवर्धक अन्न का दान हो। रोगवाला अन्न कौन सा है। एक तो वह, जो बीमारी के कीटाणुओं से भरा हो, जैसे बासी, अधसड़ा अन्न। दूसरा पोषक तत्वों से रहित अन्न। स्वास्थ्यवर्धक और बलवर्धक अन्न सन्तुलित होता है।

आयुर्वेद के अनुसार शरीर के स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए तीन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए- भोजन, निद्रा और ब्रह्मचर्य।

भोजन तीन प्रकार का है- सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी। सात्विक भोजन खेतों से और मेहनत से प्राप्त होता है। घी, दूध, फल, हरी सब्जियाँ, अन्न आदि शुद्ध और सात्विक अन्न हैं। योग सूत्र का वचन है-

आहार शुद्धो सत्वशुद्धि, सत्वशुद्धो ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृति लाभे सर्व ग्रन्थीनाम् विप्रमोक्ष।।

अर्थात् मन की शुद्धि के लिए भोजन की पवित्रता आवश्यक है। मन की शुद्धि से आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि होती है।

अब प्रश्न है कि स्वस्थ्य रहने के लिए हम कितना और कैसा भोजन खायें? इसका उत्तर दिया गया है- हितभुक् अर्थात् अपने शरीर के स्वभाव और हित के अनुसार भोजन करना। न अधिक खाना न कम। वात, कफ और पित्त प्रकृति वाले व्यक्ति का भोजन अलग-अलग प्रकार का होता है।

मितभुक् का अर्थ है कि न कम खाना और न ज्यादा। जीभ को वश में रखने वाला व्यक्ति अपने स्वास्थ्य की रक्षा करता है।

ऋतभुक् का अर्थ है कि ऋतु के अनुसार भोजन करना चाहिए। गरमी के मौसम में नमकीन भोजन लाभदायक है, क्योंकि पसीने के द्वारा शरीर का नमक बाहर होता रहता है । इसी प्रकार ठण्ड के मौसम में चिकनाई वाला भोजन स्वास्थ्यकर होता है।

जब हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें स्वास्थ्यवर्धक अन्न प्रदान करें तो हमें अपने शरीर की प्रकृति और ऋतु के अनुसार भोजन, सेवन करने का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। ठीक समय पर भोजन करने की आदत बनानी चाहिए। भोजन से

पहले स्नान करना या कम से कम हाथ धो लेने चाहिए। भोजन के समय क्रोध नहीं करना चाहिए। प्रसन्नतापूर्वक भोजन करना चाहिए। साफ-सुथरे स्थान पर बैठकर भोजन करना चाहिए। भोजन के समय बहुत पानी नहीं पीना चाहिए। भूख लगने पर ही भोजन करना चाहिए। स्वास्थ्यवर्धक भोजन सन्तुलित होता है। ऐसे भोजन में उचित मात्रा में प्रोटीन, चिकनाई, विटामिन, कार्बोहाइड्रेट और अन्य पोषक तत्व होते हैं। कुछ भोजन के साथ नशीली वस्तुओं का सेवन करते हैं। शराब, सिगरेट, अफीम, गाँजा आदि मादक द्रव्य का प्रयोग करना बीमारियों को बुलाना है। शुद्ध, सात्विक और बलवर्धक भोजन ही हमारे स्वास्थ्य को अच्छा बनाये रखता है।

हम भोजन ग्रहण करने से पहले प्रभु से जो प्रार्थना करते हैं वह प्रार्थना तभी फलीभूत होती है, जब हम उस प्रार्थना को अपने आचरण में परिणित करते हैं। बहुत से लोग बिना समझे-बूझे प्रार्थना किया करते हैं। टेप रिकार्डर जैसे प्रार्थना करने से कोई लाभ नहीं होता। इसलिए आवश्यक है कि हम जो भी प्रार्थना करें उसे भली-भाँति समझकर ही करें। हम परमात्मा से स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं और चलते हैं बीमारियों के रास्ते पर। क्या ऐसी प्रार्थना से लाभ होगा। भूलना नहीं चाहिए कि न्यायकारी परमात्मा हमें अपने कर्म के अनुसार ही फल देते हैं। यदि हम स्वस्थ और सुखी रहना चाहें तो अपने भोजन पर ध्यान दें।

- स्वामी दयानन्द लेन, बोइस चेरी रोड़,
मोका, मॉरीशस

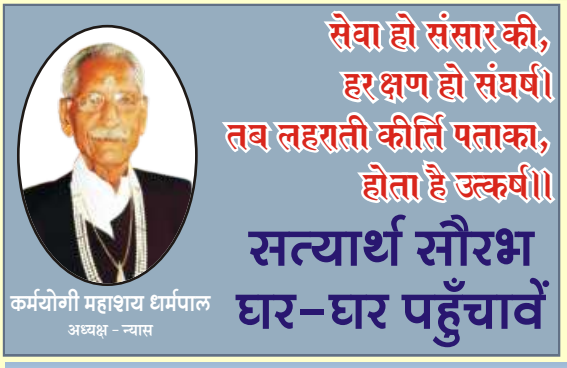

E.N.S.

आत्म निवेदन

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे राष्ट्र नायकों ने इस प्रकार के कोई प्रयास करने की आवश्यकता ही नहीं समझी जिसकी वजह से आने वाली पीढ़ी अपने महान् देश के गौरव को आत्मसात कर गौरव का अनुभव कर सके और इसे अंगीकार करने हेतु प्रयत्नशील हो। परिणामतः मैकाले की शिक्षा पद्धति अबाध गति से दिन प्रतिदिन पुष्टि को प्राप्त हो रही है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीयों पर यूँ तो अनेकानेक क्षेत्रों में पड़ा है परन्तु 'भारतीय पारिवारिक प्रणाली' विशेष रूप से प्रभावित हुई है। हमारी पारिवारिक संस्था में स्वभावतः यह क्रम रहा है कि माता पिता प्राण प्रण से सन्तान का पालन पोषण करते हैं तथा जब वे वृद्धावस्था को प्राप्त होते हैं तो सन्तान स्वभावतः ही उनकी हर प्रकार से देखभाल व आत्मीयतापूर्वक सेवा करती है। यह सन्तान का ऐसा दायित्व होता था जो सन्तान को बोझ नहीं लगता था। भारतीय परम्परा तो कवि ओम व्यास के शब्दों में जीवन पद्धति के रूप में स्वीकार करती रही है कि:-

'वो खुश नसीब हैं, माँ-बाप जिनके साथ होते हैं।
क्योंकि माँ-बाप की आशीषों के हजारों हाथ होते हैं'।।

यह भावना पाश्चात्य संस्कृति-सम्पर्क से निश्चित रूप से दरकी है, धूमिल हुई है, क्षीण हुई है। वर्तमान युग के महान् सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि- ' वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उन का हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता।' महर्षि का यह निर्देश 'भारतीय परिवार संस्कृति' की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

निष्कर्षतः माता-पिता अपनी सन्तान के हितार्थ सम्पूर्ण जीवन झोंक देते हैं। माँ-बाप की स्वाभाविक रूप से अभिलाषा होती है कि जब वे अशक्त हो जावें तो उनकी सन्तान जिनके योग-क्षेम के लिए उन्होंने अपना सब कुछ लगा दिया हो वे प्रीतिपूर्वक उनकी देखभाल करें। एक फिल्मी गीत में इसी भावना को व्यक्त किया गया था।

आ अंगुली थाम के तेरी, तुझे मैं चलना सिखलाऊँ,
तू हाथ पकड़ना मेरा जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ।

वृद्धावस्था किसी भी मनुष्य के लिए सहज नहीं होती। कल तक वह अर्जन करता था। सारे परिवार का भरण-पोषण करता था। मुखिया के रूप में उसका वर्चस्व था। उसकी आज्ञा पूरे परिवार के लिए स्वभावतः मान्य होती थी। माता भी चाहे अर्थार्जन करती न करती, उसकी स्थिति भी कमोबेश ऐसी होती थी। एकाएक सब कुछ बदल जाता है। वह अब अर्जन नहीं करता। कल तक जिसके पास व्यस्तताओं का अम्बार था यकायक वह 'ठाला' हो जाता है। जब वह इस परिवर्तन से मानसिक तादात्म्य बिठा ही रहा होता है कि परिवार के केन्द्र से उसकी च्युति हो जाती है। धीरे-धीरे अब वह परिवार का मुखिया नहीं रहता। बच्चों के निर्णय उस पर भारी पड़ने लगते हैं। इसमें यद्यपि अस्वाभाविक कुछ भी नहीं है और यह स्थिति माता-पिता पर भारी भी नहीं पड़ती यदि सन्तान अपने व्यवहार को इस प्रकार रखें कि माता-पिता एक क्षण को भी अपने को अन्य पर बोझ न समझें। स्वाभाविक रूप से उसका सम्मान पूर्ववत् ही नहीं पूर्वापेक्षा बढ़ जाय। सन्तान दिन प्रतिदिन पितृऋण सम्पन्न करती रहे। यही 'भारतीय परिवार संस्कृति' का ध्येय है, यही खूबसूरती है यही सन्तुलन है। (आज के युग में वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम उपेक्षित

प्रायः है।)

परन्तु भारतीय परिवार से उपरोक्त सामञ्जस्य तिरोहित होता जा रहा है। इसमें कुछ तो कारण तेजी से परिवर्तित हो रहा सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य है। कुछ परिवार संस्कृति से विमुखता है। यह आश्चर्य का विषय है कि आज के युग में भी भारतीय माता-पिता अपनी सन्तान के प्रति तो संवेदनशील हैं पर संवेदना और आत्मीयता का वह स्तर माता-पिता के साथ नहीं है। जबकि वे यह तो जानते ही होंगे कि स्थिति यही रही तो जब वे स्वयं वृद्ध होंगे तो उनकी सन्तान व उनके रिश्ते भी ऐसे ही होंगे जैसे उनके अपने माता-पिता के साथ हैं।

जैसाकि हमने लिखा है कि वर्तमान आर्थिक-सामाजिक ढांचा भी इसके लिए जिम्मेदार है। पहले जमाने में सन्तानों की संख्या ज्यादा होती थी। कुछ बाहर नौकरी इत्यादि हेतु चले भी जाते थे तो भी कोई न कोई बेटा माता-पिता के साथ रह जाता था। पर आज सन्तान एक अथवा दो ही होती हैं। उच्च शिक्षा के पश्चात् अधिकांश में यही संभावना होती है कि कुछ महानगरों में ही उन्हें नौकरी मिलेगी। अतः माता-पिता के सामने दो ही विकल्प रह जाते हैं या तो वे अपने मूल निवास स्थान पर अकेले रहें अथवा बेटे-बहू के साथ रहने चले जायें। पर दोनों ही स्थितियाँ सहज नहीं होतीं। प्रथम में वृद्धावस्था में अकेले में जीवन अत्यन्त दुष्कर होता है। हमारे एक मित्र हैं अत्यन्त उच्च शिक्षित। उनकी सभी सन्तानें महानगरों में नौकरी कर रही हैं। सेहत खराब होने पर तो बात क्या, छोटे-छोटे कार्यों के लिए भी उन्हें अन्यों का मोहताज होना पड़ता था। जब ईसवाल स्थित दयानन्द धाम पर वृद्धाश्रम निर्माण की बात चल रही थी तो वे काफी रुचि ले रहे थे। कारण वृद्धावस्था की समस्याओं से अकेले जूझना आसान नहीं। दूसरी स्थिति में बेटे-बहू का सान्निध्य तो मिल जाता है। पर जीवन का अधिकांश समय जिस जगह गुजारा है जहाँ सैंकड़ों मित्र, परिचित बन चुके हैं वह जगह छोड़कर सर्वथा अनजान जगह मन लगाना आसान नहीं। उस पर भागती-दौड़ती जिन्दगी में बेटे-बहू काम पर प्रातः निकल कर रात को आते हैं। ऐसे में उनका सान्निध्य भी क्या वास्तविक होता है? यहाँ भी अगर सन्तान का माता-पिता के प्रति व्यवहार आत्मीयता से भरपूर है तब तो अकेलापन भी सह लिया जाता है अन्यथा वे अपने को पोते-पोतियों की 'आया' से अधिक नहीं समझते। और इस मनोवैज्ञानिक व्यथा को वे ही बेहतर समझते हैं जो भुगत रहे हैं या जिन्होंने भुगता है।

यह तो रही उन माता-पिता की बात जिनके बच्चे देश में ही अन्य शहरों में हैं। परन्तु ऐसे माता-पिताओं की कमी नहीं जिनके बच्चे विदेशों में बसे हैं। इनकी स्थिति और भी विकट है। अनेक घटनाएँ ऐसी देखी गई हैं कि अन्तिम समय में भी उचित देखरेख के अभाव में वे संसार से प्रयाण कर जाते हैं। उनके मित्रगण शव को मुर्दाघर में रखवाते हैं। दो एक दिन में बेटे के आने पर अंतिम संस्कार किया जाता है। कई शहरों में तो ऐसी स्थिति में एक दूसरे को संभालने हेतु एनआरआई सन्तानों के माता-पिताओं ने एसोसिएशन भी बनाई हैं।

वृद्धावस्था में अकेले रहने का दर्द कम नहीं होता। कुछ वर्ष पूर्व अहमदाबाद के जीवाजी पार्क में रहने वाले आयुर्वेदिक कॉलेज के पूर्व प्राचार्य दत्तात्रेय गिरि तथा उनकी पत्नी भावना ने आत्महत्या कर ली। उनके दो पुत्र हैं। एक नागपुर में प्रोफेसर हैं दूसरा यू.एस.ए. में डॉक्टर। उन्होंने अपने अकेलेपन का दर्द अपने सुसाइड नोट में लिख छोड़ा था, जिसकी कल्पना भी कर रूह काँप जाती है।

वृद्धों के इस अकेलेपन को मनोवैज्ञानिकों ने Empty Nest Syndrome का नाम दिया है। एक युगल घोंसला बना सन्तान को पालता-पोसता है बड़े होने पर सन्तान घोंसले को छोड़ चली जाती है। और पीछे रह जाने वाले माता-पिता को यह खालीपन काटता रहता है। 'ई.एन.एस.' से ग्रसित वृद्धों में पति-पत्नी दोनों हों तो फिर भी ठीक है अगर कहीं कोई अकेला रह गया तो उसके दुःख का कोई पारावर नहीं। आज वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या इस नई चुनौती का दस्तावेज है।

प्रश्न यह है कि इस समस्या का समाधान क्या है? अच्छी नौकरी अच्छा वेतन जहाँ भी मिले वहाँ पुत्र जावे इसमें अनुचित क्या है? अधिकांश माता-पिता भी अपनी सन्तान की प्रगति में बाधक नहीं बनना चाहेंगे। बात इतनी है कि पाश्चात्य संस्कृति-संपर्क-जनित 'न्यूक्लीयर फैमिली' की अवधारणा को दूर करना होगा। आपके परिवार में जहाँ सन्तान को दिलोजान

से स्थान प्राप्त है, वहीं वृद्ध माता-पिता का भी स्थान स्वाभाविक रूप से होना चाहिए। 'With Family' की परिभाषा में पति-पत्नी-बच्चों के साथ खिसकते हुए माता-पिता का पुनर्वास होना चाहिए, ठोस रूप में स्थापित होना चाहिए क्योंकि वे सदैव परिवार के स्वाभाविक घटक हैं।

वृद्धावस्था की यह समस्या धीरे-धीरे चुनौती प्रस्तुत कर रही है। जिन भारतीय पारिवारिक संस्कारों के कारण यह दुःखद स्थिति उत्पन्न नहीं होती थी उसकी सुदीर्घता के प्रयासों की आवश्यकता न समझ केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों ने ऐसे कानून बना दिए हैं जिनकी सहायता से माता-पिता सन्तान से भरणपोषण प्राप्त कर सकते हैं। इनका भी स्वागत है। हो सकता है यह क्षणिक समाधान हो। इससे तन का पोषण हो जायगा पर मन के पोषण का क्या? जबर्दस्ती प्राप्त किए धन से मन कदापि तृप्त नहीं हो सकता। अतृप्त मन का तन भी कुम्हलाने में देर नहीं करेगा।

वस्तुतः भारतीय पारिवारिक संस्कृति का केन्द्र है प्यार, आत्मीयता, सम्मान, प्रीति। माता-पिता दूर हों या पास, अगर सन्तान के मन में स्वभावतः उनके प्रति उक्त भाव हों तो 'ई.एन.एस.' उनके पास भी नहीं फटक सकेगा।और वे समय परिस्थिति के अनुसार अपना मार्ग चुन सकेंगे।

भारतीय गृहस्थाश्रम की विशेषताओं को अपने अमरग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में उकेरित करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती पितृयज्ञ के क्रम में पितरों को परिभाषित करते हुए (जिनमें माता पिता सम्मिलित हैं) लिखते हैं कि- 'उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस-जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहै, उस-उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी, वह 'श्राद्ध' और 'तर्पण' कहाता है।' यहाँ स्पष्ट है कि गृहस्थ पितरों को तृप्त करे उन्हें सब कुछ उनकी आवश्यकता का दे, परन्तु दे कैसे? बोझ समझ कर नहीं, लोकलाज के वशीभूत नहीं। क्योंकि वह सब कृत्रिम होगा। ऋषि कहते हैं 'श्रद्धा ही नहीं अत्यन्त श्रद्धा से दे' और बाद में प्रीतिपूर्वक लिखकर अपना आशय पूर्ण स्पष्ट कर दिया कि वे माता-पिता भी प्रसन्न नहीं होते जिन्हें धनिक सन्तान सब कुछ देती है पर इस देने में श्रद्धा का, प्रीति का, आत्मीयता का अभाव रहता है।

अन्यत्र ऋषि ने लिखा है- 'अपने माता-पिता और आचार्य की तन मन धनादि उत्तम-उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करे।' ऋषि के उपरोक्त दोनों निर्देशों में 'प्रीतिपूर्वक' शब्द का विद्यमान रहना द्योतित करता है कि वे मानव मनोविज्ञान के कितने बड़े ज्ञाता थे। बिना प्रीति के सन्तान सारे सुख साधन जुटा दे, वे दुनिया भर के नौकर-चाकर रख दे सेवा-सुश्रूषा करने के लिए, परन्तु स्वयं माता-पिता के लिए दो मिनट भी न निकालें, प्यार से दो बोल भी न बोलें, तो ऐसा परिवेश दुनियाँ के लगभग सभी पितरों को स्वर्ग कदापि नहीं लग सकता। और प्यार व सम्मान से खिलायी गई सूखी रोटी भी उन्हें छप्पन भोग का हिस्सा लगेगी इसमें सन्देह का कोई स्थान नहीं। महर्षि दयानन्द का यह उद्धरण पूरा का पूरा ऋषि के आशय को ही स्पष्ट नहीं करता वरन् भारतीय परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है।

निष्कर्षतः वही सन्तान पितृऋण से उऋण हो सकती है जो सभी प्रकार से माता-पिता की सेवा करे, उन्हें तृप्त करे, और यह तभी संभव है जब यह सेवा कार्य स्वाभावतः हो, श्रद्धापूर्वक हो, अत्यन्त प्रीतिपूर्वक हो। तब निश्चय ही पितरों के आशीर्वाद फलित होंगे। कवि अब्दुल जब्बार (चित्तौड़गढ़) ने ठीक ही कहा है-

इन बुजुर्गों की आँखें कभी नम न हो, इन फरिश्तों की यादें कभी कम न हो।
इनके कदमों में जन्नत रजा आपकी, खूब खिदमत करो अपने माँ-बाप की।।

हमें निम्न श्लोक को सदैव स्मरण रखना चाहिए

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१

वेदों में इन्द्र-वृत्र युद्ध और वृष्टि विज्ञान

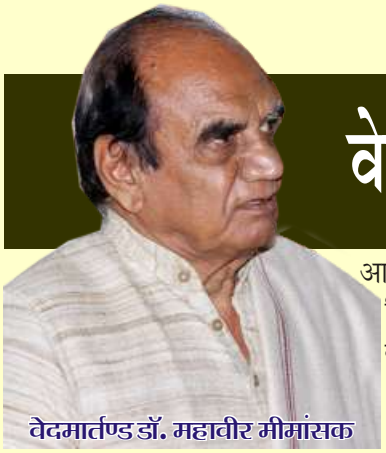

आचार्य यास्क का निरुक्त वैदिक युग की एक क्रान्तिकारी रचना है। यह ग्रन्थ उस समय का प्रतिबिम्बन है जब वेद के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्त धारणाएँ प्रचलित हो चुकी थीं, विशेषतः वैदिक मंत्रों के अर्थों के सम्बन्ध में। वैदिक मंत्रों के अर्थ भिन्न-भिन्न प्रकार से करने के ११ सम्प्रदायों का उल्लेख यास्क के निरुक्त में मिलता है जो उस समय तक प्रचलित हो चुके थे जिनमें ऐतिहासिक सम्प्रदाय भी एक था। इन सम्प्रदायों का उल्लेख यास्क ने इति याज्ञिकाः, इति पौराणिकाः, इति वैयाकरणाः, इति ऐतिहासिकाः, इत्यन्ये, इत्यपरे इत्यादि शब्दों से किया है और इन सबके विपरीत/ अतिरिक्त अपनी पद्धति को रखा है जिसे वे 'इति नैरुक्ता' कहकर अभिव्यक्त करते हैं। अपनी वेदभाष्य पद्धति को प्रतिष्ठापित और प्रतिपादित करने के लिए यास्क को अपने पूर्व पक्षियों की मान्यताओं का विस्तार से उल्लेख करके उनका तर्क और प्रमाणपूर्वक खण्डन करना पड़ा। वेद के अर्थ को स्पष्ट और निर्भ्रान्त समझने का मार्ग प्रशस्त करने के लिए उन्हें निरुक्त में स्थान-स्थान पर वेद से सम्बन्धित अनेक सिद्धान्तों की परिभाषा और व्यवस्था करनी पड़ी। वेदभाष्य-पद्धति में उनका भाषा विज्ञान के क्षेत्र में अर्थ विज्ञान का अद्‌भुत सिद्धान्त **'धातुज सिद्धान्त'** था जो शब्दों का निर्वचन वैदिक धातुओं से व्युत्पन्न करके उनका अर्थ निर्धारण थोड़ा रूढ़ि के आधार पर ढूँढ़ता था जिसके लिए उन्हें कहना पड़ा, **'अर्थ नित्यः परीक्षेत, न व्याकरणमाद्रियेत, विशयवत्यो हि वृत्तयो भवन्ति'।**

यास्काचार्य वेद की भ्रान्तिपूर्ण व्याख्या करने वाले सम्प्रदायों का उल्लेख बड़ी ईमानदारी से स्पष्ट रूप में बड़े विस्तार से करते हैं जिनमें एक ऐतिहासिक सम्प्रदाय भी है जो वेद में पूर्वकालिक इतिहास की घटनाओं की व्याख्या वैदिक मंत्रों के आधार पर करते हैं। यद्यपि यास्क ने ऐसी ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख अनेक मंत्रों की यथा प्रसंग व्याख्या के अवसर पर किया है जिसका स्पष्ट खण्डन भी यास्क ने उन वैदिक मंत्रों की व्याख्या अपनी पद्धति के आधार पर करके किया है। हम यहाँ पर केवल एक ही प्रसंग को प्रस्तुत करते हैं और वह है वेद में **इन्द्र-वृत्र-युद्ध।**

इन्द्र-वृत्र-युद्ध का विशद् और स्पष्ट वर्णन ऋग्वेद के प्रथम मंडल के ३२ वें सूक्त में मिलता है जिसमें २५ मंत्र हैं। सूक्त के प्रथम मंत्र का वर्णन इन शब्दों से प्रारम्भ होता है- **'इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री'** अब हम इन्द्र के प्रमुख बल पराक्रम के कार्यों का वर्णन करते हैं जो वह सर्वप्रथम करता है। इन्द्र के सर्वप्रथम बल, पराक्रम के कार्य को बतलाता हुआ वेद मंत्र का अगला चरण कहता है **'अहमहिम्'** इन्द्र सर्वप्रथम अहि (मेघ) को मारता है। इन्द्र क्या है, अहि और वृत्र क्या हैं ? इत्यादि का स्पष्टीकरण हम आगे सप्रमाण करेंगे। इस संदर्भ में इसी सूक्त के १० वें और ११ वें मंत्र को हम यहाँ उद्‌धृत करते हैं।

अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम्।
वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम आशयदिन्द्रशत्रुः।

- ऋक् १.३२.१०।।

यास्काचार्य अपने अद्‌भुत ग्रन्थ निरुक्त में सीधे यह प्रश्न उठाते हैं- **तत् को वृत्रः?** (निः २.५) यहाँ मंत्र में पठित वृत्र कौन है? बड़ा स्पष्ट उत्तर देते हैं। **'मेघः इति नैरुक्ताः, त्वाष्ट्रोसुरः इत्यैतिहासिकाः।** नैरुक्तों के अनुसार वृत्र मेघ है और ऐतिहासिकों के अनुसार त्वष्टा का पुत्र असुर वृत्र है। यास्क ने यहाँ दोनों पक्ष बड़ी ईमानदारी से स्पष्ट रख दिए हैं। वेद में इतिहास मानने वाला सम्प्रदाय यास्क के समय तक प्रखर रूप में उभर चुका था और वेद के मंत्रों की व्याख्या ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बड़ा मुखर हो कर करता था, यह तथ्य यास्क के इस वचन तथा अन्य वचनों से बड़ा स्पष्ट है। किन्तु यास्क भी इनके विरोध में बड़ा प्रबल स्वर खड़ा करते हैं और वेद के प्रत्येक शब्द की व्याख्या बड़े प्रामाणिक सिद्धान्तों के आधार पर करने का विज्ञान प्रतिष्ठापित करते हैं। यहाँ यह तथ्य स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि यास्क से बहुत पहले से ही वेद की व्याख्या निर्वचन सिद्धान्तों पर करने की पद्धति प्रचलित थी, यास्क कोई प्रथम आविष्कारक नहीं थे इस पद्धति के, वे तो इस पद्धति के उद्धारक, प्रतिष्ठाता थे, यह बात उनके ग्रन्थ निरुक्त के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है, यही बात यहाँ इति नैरुक्ताः शब्दों से भी स्पष्ट है। अस्तु। यद्यपि शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में इस मंत्र का विनियोग दर्शपौर्ण मास

याग के प्रसंग में दर्षेष्टि सौत्रामणि याग में किया गया है, जहाँ इस मंत्र की याज्ञिक व्याख्या बड़ी प्रतीकात्मक है और बड़ी रहस्यमयी लगती है किन्तु याज्ञिक प्रतीकात्मक वह व्याख्या अन्ततः वही है जो यास्क ने वृत्र शब्द का अर्थ मेघ देकर की है। सायणाचार्य ने इसकी व्याख्या शतपथ ब्राह्मण में भी बड़ी भ्रामक की है। अन्यत्र ब्राह्मण ग्रन्थों में भी सामान्य पाठक को ऐसी ही लगती है। इसके लिए पूरी याज्ञिक प्रक्रिया की व्याख्या समझनी होगी जो जैमिनि ने अपने दर्शन 'पूर्व मीमांसा' में की है। हम यहाँ यास्क के आधार पर लिख रहे हैं।

जैसे वृत्र शब्द का अर्थ मेघ देकर यास्क ने भ्रम निवारण किया वैसे ही देवता और इन्द्र शब्दों का वास्तविक अर्थ क्या है जिनके सम्बन्ध में बहुत बड़ा भ्रम है, वह भी यास्क ने निर्भ्रान्त स्पष्ट किया है।

देवता का वेद में क्या अभिप्राय है, यास्क ने लिखा है- **'यत्काम ऋषिर्यरयां देवतायामार्थपत्यमिच्छन् स्तुतिं प्रयुङ्क्ते तद्दैवतः स मंत्रो भवति'** (नि ७/१)। देवता मंत्र का (अर्थपति) मुख्यार्थ शीर्षक या वर्णनीय विषय वस्तु होता है। ऋषि अपनी कामना के अनुसार मंत्र का देवता बदल ले, यह व्याख्या करना सर्वथा गलत है। यहाँ ऋषि की आर्थी कामना या भावना सनातन है, वह समय समय पर बदलती नहीं है। यदि ऐसा होता तो अभी तक मंत्रों के देवता कितनी ही बार बदलते बदलते अनेक हो जाते, किन्तु देवता वही निश्चित है क्योंकि मंत्रों के अर्थ निश्चित हैं। देवता के सम्बन्ध में एक और भ्रान्ति का निवारण यास्क करते हैं कि देवता कोई पुरुषाकार व्यक्ति नहीं है। (द्र. निरु. ७.७)

अपुरुषविधानामेव सताम्....एष चाख्यानसमयः।

इन्द्र क्या है, यह भी यास्क ने निर्भ्रान्त स्पष्ट किया है। इन्द्र आदि देवता कोई दैत्याकार, विशालकाय या पुरुष व्यक्ति विशेष नहीं है जैसाकि मध्यकालीन वेद भाष्यकारों, पश्चिमी विद्वानों और उनकी अन्धी दासता करने वाले आधुनिक भारतीय विद्वानों ने समझ लिया है। यास्क इस सम्बन्ध में बहुत ही महत्वपूर्ण वैदिक विज्ञान के रहस्यों का उद्घाटन करते हैं जिसे आज फिर से प्रखर रूप में उजागर करने की महती आवश्यकता है।

यास्क के अनुसार वेद में तीन ही वर्णनीय विषय देवता हैं

१. पृथ्वी स्थानीय अग्नि

२. अन्तरिक्ष स्थानीय वायु या इन्द्र

३. द्यु स्थानीय सूर्य। तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः।

अग्निः पृथ्वी स्थानो वायुर्वेन्द्रो वान्तरिक्षस्थानः सूर्योद्युस्थानः।

– (निरुक्त ८.२)।

यास्क के इस वचन के अनुसार वेद में समग्र सृष्टि मण्डल का भौतिक विज्ञान वर्णनीय विषय है। समस्त सृष्टि भौतिक विज्ञान की दृष्टि से तीन वर्गों में विभक्त है, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यु। पृथ्वी पर मुख्य भौतिक शक्ति अग्नि का कार्यकलाप है, अन्तरिक्ष, वायु या इन्द्र की भौतिक शक्ति के व्यापार और कार्यों का क्षेत्र है और द्युलोक सूर्य की भौतिक शक्तियों का कार्य क्षेत्र है। एतदनुसार इन्द्र अन्तरिक्ष लोक में कार्य व्यापार करने वाली भौतिक या प्राकृतिक शक्ति है।

अन्तरिक्ष में अपना कार्य व्यापार करने वाली ६८ भौतिक शक्तियों का वर्णन वेद में किया गया जिनका उल्लेख वैदिक निघण्टु (अ.५.४.५) में किया गया है, उनमें प्रथम पाँच का उल्लेख हम करते हैं

१.वायु २. वरुण ३. रुद्र ४. इन्द्र ५. पर्जन्य (द्र. वैदिक निघण्टु अ. ५.४)। इन सबकी परिभाषा यास्क ने अपने निरुक्त में निर्वचन और उसकी व्याख्या द्वारा की है तथा वेद मंत्रों के उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया है कि ये भौतिक शक्तियाँ किस प्रकार की हैं अपना कार्य व्यापार अन्तरिक्ष में करती हैं जिससे इस समस्त सृष्टि की क्रियाओं प्रक्रियाओं का संचालन होता है। इन सबकी विस्तृत व्याख्या वैदिक उदाहरणों सहित विस्तार से जानने के लिए हमारा लेख देखिये- **वेदेषु अन्तरिक्ष विज्ञानम्।** यहाँ हम अपने को प्रस्तुत विषय इन्द्र देवता तक ही सीमित रहेंगे।

वेद में इन्द्र देवता क्या है और उसका क्या स्वरूप है, यह बात इन्द्र के यास्कीय निर्वचन से स्पष्ट हो जाती है।

वैदिक इन्द्र देवता का निर्वचन निरुक्त (१०.१) में निम्न है-

'इन्द्र इरां दृणातीति वा, इरां ददातीति वा, इरां दारयत इति वा, इन्दवे द्रवतीति वा, इन्दौ रमत इति वा, इन्धे भूतानीति वा।'

इन्द्र मेघ को फाड़कर जल के रूप में बरसाने के लिए परिणित करता है, अथवा बादल को बरसा कर भूमि में अन्नादि के बीज को फाड़कर अंकुरित करता है। दुर्गाचार्य

ने भी इस की यही व्याख्या की है 'वर्षक्लेदित अंकुर बीजं भिनत्ति तमिन्द्रकर्म।' द्र-दुर्ग निरु. १०.१। 'इन्दवे द्रवति' की व्याख्या दुर्गाचार्य ने यूँ की है 'इन्दुःसोमः तं पातुमसौद्रवति, द्रवति गत्यर्थः। सोम पानार्थमसौ द्रवति।' अन्तरिक्ष में जब वाष्प के रूप में एकत्रित जलीयांश सोम है, उस को पीने के लिए दौड़ता है अथवा सोम में रमण करता है, विचरता है, यह मेघ में स्थित वैद्युत् अग्नि है जो वर्षा से पहले कौंधती है और मेघ को जल के रूप में विदीर्ण करके बरसाने के लिए संघर्ष करती है। यही बात 'इन्धे भूतनि' भौतिक पदार्थों को यह जलाती है, से स्पष्ट की है। इन्द्र का स्वरूप यास्क ने (निरुक्त-अ.७,पा.३) में स्पष्ट किया है-

अथास्य कर्म- रसानुप्रदानं, वृत्र वधः,
या च का च बलकृतिरिन्द्रकर्मैव तत्।

मेघ को रस (जल) के रूप में परिणित करके वृष्टि प्रदान करना वृत्र का वध और अन्य जो भी अन्तरिक्ष में शक्ति सम्पन्न कार्यों की घटनाएँ होती हैं वे सब इन्द्र के ही कार्य हैं। 'वृत्र वधः' की व्याख्या दुर्गाचार्य ने मेघवधः की है। इसे हम आगे स्पष्ट करेंगे। इन्द्र वह भौतिक शक्ति वैद्युत् अग्नि है जो अन्तरिक्ष में मेघ का विदारण करके जल के रूप में प्रवाहित करती है जो वृष्टि कहलाती है। जिन वेद मंत्रों या सूक्तों में इस भौतिकशक्ति का या इसके कार्यकलापों का वर्णन है उनका वर्णनीय विषय इन्द्र है अतः उनका देवता इन्द्र कहलाता है। इन्द्र के कार्यों का वर्णन स्पष्ट करने के लिए हम अपने पूर्व प्रस्तुत मंत्र पर आते हैं।

ऋग्वेद १.३२.१० वां उपरोक्त मंत्र जलवाची 'काष्ठा' वैदिक शब्द के उदाहरण के रूप में यास्क ने निरुक्त में प्रस्तुत करके इसकी व्याख्या बड़ी स्पष्ट की है। 'आपो हि काष्ठा उच्यन्ते, क्रान्त्वारिथता भवन्तीति' (निरु. अ. २ पा.५)।

काष्ठा शब्द के जलवाची इस निर्वचन में यास्क ने मेघ स्थित जल के उदाहरण के रूप में यह मंत्र प्रस्तुत किया है।' 'अतिष्ठन्तीनां' की व्याख्या दुर्गाचार्य ने मेघोदरं ?से की है। मेघ में सुरक्षित इधर उधर अन्तरिक्ष में घूमते हुए पानी को बादलों ने अपने अन्दर गुप्त रख रखा है वृत्र अर्थात् मेघ बादल (निरु १.१०) पानी के भार से नीचे झुक गया है, लबालब भरा हुआ पानी 'अनिवेशनानां' इधर से उधर विचरण कर रहा है। इस प्रकार 'इन्द्र, शत्रु' अर्थात् मेघ/बादलों की घनघोर घटा से चारों ओर गहन अन्धकार छा गया है। यह मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ होने से पहले की स्थिति का वर्णन है। 'दीर्घतम आशयदिन्द्रशत्रु।' ऋ.१/३२/१०

यहाँ मंत्र में इन्द्र शत्रुः शब्द ध्यातव्य है। यास्क ने इस शब्द की व्याख्या यूँ की है, इन्द्र शत्रुरिन्द्रो रस्यशातयिता वा शमयिता वा। इन्द्र वह भौतिक शक्ति है जो मेघ को प्रताड़ित करती है, विदारित करती है, जल के रूप में परिणित करके वृष्टि के रूप में उसका शमन करती है। यह वैद्युत ऊर्जा है जो बिजली की कड़क के बाद बादल को पिघला कर वृष्टि के रूप में प्रवाहित करती है।

यही पर यास्क ने प्रश्न उठाया है, 'तत्को वृत्र' ? उत्तर भी यहीं दिया है, 'मेघ इति नैरुक्ताः'। नैरुक्त परम्परा के अनुसार मेघ ही वृत्र है। इन्द्र कैसे इस वृत्र अर्थात् इस मेघ का शत्रु-'शातयिता या शमयिता' कहलाता है, इस उत्सुकता भरी जिज्ञासा और कौतूहल का समाधान यास्क स्वयं पेश

करते हैं 'अपां च ज्योतिपश्चमिश्रीभाव कर्मणो वर्ष कर्म जायते, तत्रोपमार्थेन युद्धवर्णा भवन्तिः'। मेघस्थ जल के साथ जब वैद्युत ज्योति-अग्नि का मिश्रण संघर्षण होता है तो वृत्र मेघ का जल सङ्घात रूप विदीर्ण होता है और मेघ जल के रूप में द्रवित होकर वृष्टि के रूप में परिणित हो जाता है, वैद्युत्-अग्नि का मेघ के साथ यही मिश्रण संघर्ष के रूप में चलता है और अन्तरिक्ष में होने वाली इसी प्राकृत घटना को इन्द्र-वृत्र-युद्ध उपमालंकार से कहा जाता है जो काव्यशास्त्र का प्रसिद्ध अलंकार है। वेद भी देव का अजर अमर काव्य है- 'पश्यदेवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति'। यहाँ इन्द्र-वैद्युत ज्योति या वैद्युत्-अग्नि है और वृत्र साक्षात् मेघ है। वैद्युत-ऊर्जा मेघ को जल के रूप में द्रवित करने में पूरे संघर्ष के साथ जोर लगाती है और जब उसकी शक्ति मेघ पर हावी हो जाती है तो मेघ द्रवित होकर बरसने लगता है यही वृत्र का वध है अर्थात् मेघ का विदीर्ण होकर जल के रूप में द्रवित होना। इसी रोचक घटना को यास्क ने वर्णित करते हुए कहा है- 'विवृद्ध्या स्रोतांसि निवारयाञ्चकार, तास्मिन् हते प्रसस्यन्दिरे आपः (नि.२.५)। मेघ जल के रूप में द्रवित होकर बरसने से पहले खूब घनघोर रूप धारण करते हुए बढ़ता है, फैलता है और अन्त में इन्द्र वैद्युत शक्ति से

विदीर्ण होकर बरसने लगता है। इसीलिए इन्द्र वृत्र का शातयिता या शमयिता होने के कारण 'इन्द्रशत्रु' कहा गया है जिसका अर्थ बहुव्रीहि समास मानने पर वृत्र या मेघ होगा (इन्द्र शत्रु यस्य सः इन्द्रशत्रुः वृत्र या मेघ)। यही अर्थ यहाँ अभिप्रेत है। अन्यथा तत्पुरुष समास मानने पर **'इन्द्रस्य शत्रुः'** इस विग्रह में वृत्र या मेघ इन्द्र का शातयिता या शमायिता बन जावेगा जो अभीष्ट नहीं है। इन्द्र शातयिता होने पर वृत्र या शातयिता या शमयिता होने पर वैद्युत शक्ति का जोर मेघ को जल के रूप में विदीर्ण करके वृष्टि करने में असफल रहेगा और बादल गर्ज गर्जाकर नौ दो ग्यारह हो जायेंगे। यज्ञ प्रक्रिया अनुष्ठान में इसी दोष और विकृति का वर्णन ब्राह्मण ग्रन्थों के इस वचन से होता है **'इन्द्रशत्रुर्वधस्व'** जिसमें यजमान स्वर दोष से इसका उच्चारण अन्तोदात्त तत्पुरुष समास करके करता है जो वर्षेष्टि-याग-अनुष्ठान की दूषित प्रक्रिया का द्योतक है, जिससे अभीष्ट फल अर्थात् वृष्टि से यजमान (जनता) वंचित रह जाता है। 'वर्धस्व' शब्द मेघ के बरसने से पहले उसके घनघोर आप्यायित रूप का द्योतक है जिसे यास्क ने 'विवृदध्या' शब्द से कहा है। इस वर्षेष्टि भाग के अनुष्ठान की प्रक्रिया का विशद् विवेचन और वर्णन पूर्व मीमांसा में किया गया है जिसे आजकल हर कोई किसी भी तरह से कर बैठता है और अभीष्ट फल नहीं मिलता। वेद में उपमा अलंकार के रूप में युद्ध का वर्णन केवल इन्द्र और वृत्र का ही नहीं है अपितु वेद में इन्द्र और अहि के युद्ध का वर्णन भी इसी युद्ध की उपमा के माध्यम से होता है क्योंकि वृत्र का भाँति **'अहि'** शब्द भी वेद में मेघ का वाचक है (निघ. १.१०) इसी बात को यास्क फिर स्पष्ट करते हैं, **'अहिवत्तु खलु मन्त्रवर्णाः ब्राह्मण वादश्च** (नि. २.५)।

अतः इस संबंध में भ्रम या संशय न रहे, यह तथ्य यास्क ने और निरुक्त के उत्तरवर्ती स्कन्द स्वामी तथा दुर्गाचार्य आदि व्याख्याकारों ने आज से हजारों वर्ष पहले ही स्पष्ट कर दिया था, जिसका पता प्राचीन भारतीयों को अन्तरिक्ष में काम करने वाली इन्द्र आदि भौतिक शक्तियों और वृष्टि विज्ञान की सूक्ष्म बारीकियों से भली भाँति था। **क्रमशः .....**

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. डी. एन. झा का 'Paradox of Indian Cow' शीर्षक से वैदिक देवताओं के सम्बन्ध में भ्रान्तिपूर्ण लेख हिन्दुस्तान टाइम्स में १७ दिसम्बर २००१ में छपा था। उसके उत्तर में डॉ. महावीर मीमांसक का यह लेख आर्य पत्रिकाओं में छपा था। पाठकों की जानकारी ताजा करवाने और नये पाठकों तक यह जानकारी पहुँचाने के लिए हम मान्य डॉ. साहब द्वारा प्रेषित इस लेख को पुनः प्रकाशित कर रहे हैं।

- सम्पादक

वैदिक शोध सदन,
ए-३/११, पश्चिम विहार, नई दिल्ली- ११००६३

सत्यार्थप्रकाश पहेली-१३

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (द्वितीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ती	१		२	र्त्त		३ पाँ		३ ता
४	न्मा	४	४ दि		५	५ च्ची		६	ष्फ ६
७ प्रे			८	ख		९	क	२	९ त्र

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. बालकों को देवनागरी के साथ अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी अभ्यास कराया जाय यह निर्देश महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के किस समुल्लास में दिया है?
२. माता-पिता ऐसा प्रयास करें कि सन्तान किसके बहकावे में न आ सके?
३. भूत-प्रेतादि भगाने का आडम्बर करने वालों को क्या भेंट करना चाहिए?
४. किन रोगों का नाम भूत-प्रेतादि रखते हैं?
५. ज्योतिश्शास्त्र में अंक, बीज गणित आदि विद्याएँ कैसी हैं?
६. जन्मपत्री कैसी होती है?
७. मृतक शरीर का नाम क्या हैं?
८. ग्रहादि जड़ हैं अतः क्रोधित होकर क्या नहीं दे सकते?
९. महर्षि ने जन्मपत्र को क्या नाम दिया है?

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मार्च २०१५

गुजरात की पुण्यभूमि टंकारा के सपूत महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर सन्देश है-

नारी का सम्मान करो, देश का उत्थान करो

नारी सम्मान-मानवता का मान

नारी के साथ हो रहे अनाचार एवं उत्पीड़न से मानवता का हनन हो रहा है। नन्हीं अबोध बालिकाओं से दुष्कर्म एवं उनकी निर्मम हत्या, महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार आदि से हर उम्र एवं हर वर्ग की महिलायें असुरक्षित तथा संत्रस्त हैं। इनके निवारण के उपाय किए जा रहे हैं लेकिन स्थिति वैसी ही विषम बनी हुई है।

नारी की सुरक्षा कैसे हो, उसकी मान-मर्यादा कैसे बनी रहे, जिससे वह निर्भीक होकर समाज की समुन्नति में उत्साह एवं उल्लास से सहभागी बन सके, यह विचारणीय प्रश्न है।

आर्ष कन्या गुरुकुल, चोटीपुरा

आज नारी के लिए सभी क्षेत्रों में शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय एवं राजनीति आदि के द्वार खुले हैं, वह पदासीन भी है लेकिन वह पुरुष की पाश्विक वृत्तियों से भयाक्रान्त है।

इस समस्या का समाधान उन्नीसवीं शताब्दी के महापुरुष आदित्य ब्रह्मचारी, अद्‌भुत शक्ति सम्पन्न समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन दर्शन से प्राप्त कर सकते हैं। उस समय उन्होंने सामाजिक कुरीतियों एवं अशिक्षा के कारण बाल विवाह, विधवाओं पर हो रहे अत्याचार, अनमेल विवाह (प्रौढ़ एवं वृद्ध पुरुषों से कम उम्र की बालिकाओं के विवाह) आदि से नारी की वेदना को समझा। प्रत्येक स्त्री में माता की महिमा को देखकर उसका सम्मान किया। नारी को सजग एवं सुशिक्षित बनाकर समाज में सम्मान दिलाने का आजीवन अथक प्रयास किया। स्वामी जी के मार्गदर्शन में आर्य समाज के पुरोधाओं ने कन्या गुरुकुल खोले। शहरों एवं गाँवों में वैदिक कन्या विद्यालयों के अभियान ने हर एक जाति एवं वर्ग की बालिकाओं के लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था की। विधवाओं को सामाजिक तिरस्कार एवं उत्पीड़न से मुक्ति दिलाने के लिए विधवाश्रमों की स्थापना की। इनमें महिलाओं को शिक्षित करके उनके पुनर्विवाह की व्यवस्था की जाती थी। गुजरात में वडोदरा में १९३३ में आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा के साथ ही विधवाश्रम की स्थापना पंडित आत्माराम जी ने की थी। इसमें शिक्षा के साथ ही गृहकार्यों का प्रशिक्षण भी दिया जाता था तथा

आर्ष कन्या गुरुकुल, शिवगंज

उनके विवाह की व्यवस्था आर्य समाज करता था।

ऋषि के लिए आदर्श नारी प्राचीन भारत की विदुषी ब्रह्मचारिणी गार्गी थी। गार्गी विद्वानों एवं दार्शनिकों के सम्मेलनों में याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों के समकक्ष ब्रह्मचर्चा तथा वाद-विवाद करती थी। ऋषि ने गार्गी के उदाहरण से नारी को वेद पढ़ने, यज्ञ करने तथा पुरोहित के रूप में यज्ञ एवं वैदिक संस्कार कराने का अधिकार दिया तथा गुरुकुलों एवं वैदिक विद्यालयों में इसका समुचित प्रशिक्षण दिया गया। ऋषि स्वयं तप, संयम एवं ब्रह्मतेज के पुंज थे। वे युवकों को संयम एवं ब्रह्मचर्य से आत्मविकास के साथ शिक्षा देना चाहते थे। इसके लिए प्राचीन भारत के शिक्षा केन्द्र तक्षशिला के अनुरूप गुरुकुल कांगड़ी जैसे आदर्श गुरुकुलों की स्थापना की गई।

आज भौतिकवाद एवं उपभोक्तावाद की चकाचौंध में हमारे मानवीय मूल्य क्षीण होते जा रहे हैं। नारी भी उपभोग की वस्तु बन रही है। महिलाओं पर दिन-प्रतिदिन यौन आक्रमणों की बढ़ती संख्या का मूल कारण आज के समाज निर्माताओं द्वारा मानव जीवन में संयम तथा ब्रह्मचर्य के विकास के महत्व को पूर्णतः नकार देना है।

ऐसे समय में माननीय नरेन्द्र भाई मोदी से हमें अवश्य आशा है कि आज महिलाओं की अस्मिता को आए दिन तार-तार किया जा रहा है वे इसे सर्वोपरि समस्या मान इसके समाधान

में प्रवृत्त होंगे। वे स्वयं संयम एवं शील के धनी हैं। ऋषि की जन्मभूमि गुजरात के यशस्वी सपूत हैं। उनके माध्यम से स्वच्छता के अभियान की भाँति ही पुरुष वर्ग में शील एवं संयम का सन्देश पहुँचे। हमारे परिवारों में जागृति आये कि वे बालक-बालिकाओं का समान रूप से पालन-पोषण करें। अपने बालकों की गतिविधियों के प्रति सदा सतर्क रहें एवं उन्हें कुमार्ग पर चलने से आरम्भ में ही नियंत्रित करें। नारी के प्रति पुरुष वर्ग में सम्मान की भावना बनाने में हमारे परिवार तथा शिक्षक वर्ग का सबसे बड़ा दायित्व है। ऋषि ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में शतपथ ब्राह्मण के उद्धरण से लिखा है- **'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद'** मनुष्य के सम्पूर्ण चरित्र का निर्माण माता-पिता तथा आचार्य से होता है। मनु ने गौरव से घोषणा की थी कि इस देश से पृथ्वी के लोगों ने चरित्र की शिक्षा प्राप्त की है। ऋषियों के वचन हैं-'यथा राजा तथा प्रजा।' जैसा शासक होता है वैसी ही जनता होती है। हमें विश्वास है कि मोदी जी के शासन से अनाचार एवं दुष्कर्म दूर होंगे। सभी समानता एवं सद्भाव से एक दूसरे का सम्मान करेंगे। देश के चरित्र का उत्थान होगा।

अत्यन्त आवश्यक है कि गुजरात की महान् विभूति महर्षि दयानन्द सरस्वती के नारी-सम्मान के सन्देश को आज जन-जन तक पहुँचाया जावे।

पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग
(मीरा गर्ल्स कॉलेज, उदयपुर)
वर्त्तमान पता- ए-२५, वैशाली नगर
जयपुर

कथा सरित

तिल-गुड़ की खुशियों का गुरुमंत्र

एक आश्रम में गुरु जब अपने शिष्य को आशीर्वाद दे रहे थे कि थोड़ी ही दूर पर आपस में लड़ते दो शिष्यों की आवाज उन्हें सुनाई दी। उन्हें आश्रम में आए अधिक समय नहीं हुआ था। शिष्यों के पास पहुँचकर उन्होंने पूछा- क्या बात है? क्यों झगड़ रहे हो तुम दोनों?

एक शिष्य बोला- गुरुजी! आज मकर संक्रान्ति के दिन मैं आपको तिल के लड्डू खिलाना चाहता था। लेकिन मेरा यह सहपाठी कहता है कि पहले मैं खिलाऊँगा। जब विचार पहले मेरे मन में आया है तो मुझे पहले खिलाने का अधिकार है। लेकिन यह बेईमानी कर रहा है। इसे मुझसे ईर्ष्या है। आप ही बताएँ कि उचित क्या है?

गुरुजी बोले- बच्चों! मैं तुम दोनों की भावना समझता हूँ। लेकिन तुम्हारी भावना में अभी इस त्योहार की सच्ची भावना सम्मिलित नहीं है। इसलिए तुम आपस में झगड़ रहे हो।

मकर संक्रान्ति के दिन तिल के लड्डू इसी भाव से खिलाए जाते हैं कि हमारे बीच जो भी मतभेद या मनभेद हैं वे नष्ट हों और हम बैर भाव भुलाकर मीठा-मीठा बोलें। इसलिए लड्डू देते वक्त हम कहते हैं- **'तिळ गुळ घ्या आणि गोड गोड बोला'** यानी तिल गुड लो और मीठा मीठा बोलो। और तुम कितना मीठा बोल रहे हो, यह तुम स्वयं निर्णय करो।

अतः मकर संक्रान्ति के सच्चे भाव को आत्मसात करते हुए पहले मुझे नहीं एक-दूसरे को तिल के लड्डू खिलाओ। गुरु की बात सुनकर शिष्यों ने उनके कहे का अनुसरण किया और एक-दूसरे को सच्चे हृदय से लड्डू खिलाने के बाद गले लगा लिया।

क्या बात है! कितना अनोखा अंदाज था गुरु का अपने शिष्यों को सिखाने का। वे न केवल अपने शिष्यों को सिखा गए बल्कि आज भी हम जैसे लोगों को सिखा रहे हैं। तो मकर संक्रान्ति पर आपसे भी एक आग्रह है कि आज जब आप काम पर जाएँ तो तिल के लड्डू साथ ले जाएँ और सभी स्नेहीजनों के साथ ही उस सहकर्मी को अवश्य खिलाएँ जिसके साथ आजकल आपकी पटरी नहीं बैठ रही है।

हाँ, शर्त यह है कि भाव भी शुद्ध होना चाहिए। लड्डू खिलाने के साथ ही आज से उससे मीठी-मीठी बातें भी करना शुरू कर दें। कुछ समय बाद निश्चित ही आपको चमत्कारिक परिणाम मिलने लगेंगे और आपके दफ्तर की हवा भी बदलेगी। लेकिन याद रहे कि आप अपनी इस सफलता पर फूल मत जाना। वरना वही होगा जो पतंग और गुब्बारे के साथ होता है। यही है आज का गुरुमंत्र।

साभार- Anmolvachan.ni

स्वराज्य के प्रथम मंत्रद्रष्टा महर्षि दयानन्द

– जगदीश प्रसाद हरित

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्ति तक की अवधि में स्वाधीनता के दीपक में तेल पूरने वाले बलिदानियों की दीर्घ परम्परा प्राप्त होती है। १८५७ की क्रान्ति विफल हुई, उसे जिस पैशाचिकता से कुचला गया, उसका दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है।

उन्हीं दिनों टाइम्स पत्र ने लिखा था- 'No such scene has been witnessed in the city of Shah Jahan since the day of nadir shah अर्थात् शाहजहाँ के शहर में नादिरशाह के कत्लेआम के पश्चात् ऐसा दृश्य नहीं

देखा गया। भारत के तात्कालिक सम्राट बहादुरशाह के शहजादों को पकड़ कर सड़कों पर घुमाया, फिर नंगा कर, गोलियों से उड़ाकर नहर में फेंक दिया। इसी प्रकार अजनाला के थाने में ८३२ सैनिकों को कैद कर लाये। उन्होंने दो ब्रिटिश अफसरों को मार डाला था। उनमें से १४० को तुरन्त कत्ल कर दिया गया। शेष को एक तंग कमरे में बन्द कर दिया, उन्हें जब निकाला तो दम घुटने से अधिकांश मर चुके थे। फिर बचे हुए लोगों को हाथ बाँधकर हत्या कर एक कुँए में दफन कर दिया। इस घटना के बारे में कूपर ने बड़े अभिमान से लिखा था There is a well at Kanpur but there is also one at Ajnala. अर्थात् यदि एक कुँआ कानपुर में है तो दूसरा अजनाला में भी है। कूपर के उपर्युक्त कथन में कानपुर की उस घटना का संकेत है जिसमें गदर के समय क्रान्तिकारियों ने कानपुर में अंग्रेज अधिकारियों और उनकी स्त्रियों बच्चों को बन्दी बना लिया था। फिर नदी पार करती हुई उनकी नाव पर गोलियाँ चला कर मार डाला जो बच गए उनको मारकर कुँए में फेंक दिया था। कूपर का भाव है कि उसने बदला लिया। अभी मार्च २०१४ में इतिहासकार सुरेन्द्र कोचर के प्रयासों से कालिया वाला खूँ के नाम से प्रसिद्ध अज़नाला कुँए की खुदाई से ५० मानवीय खोपड़ियाँ, १७० जबड़ों, ५००० दाँत, कुछ स्वर्णाभूषण और कुछ ब्रिटिश सिक्कों की उपलब्धि ने फिरंगियों के द्वारा कारित इस क्रूर हत्याकाण्ड पर प्रामाणिकता की मोहर लगा दी है। (विशेष जानकारी के लिए देखें उदयपुर का सत्यार्थ सौरभ मासिक जुलाई २०१४ का अंक)। यह सब भारतीयों की विद्रोही गतिविधियों की प्रतिक्रिया अथवा बदला मात्र नहीं था? अपितु अंग्रेजों का विजयोन्माद और उससे भी बढ़कर भारतीयों की स्वातंत्र्य भावना को सदा-सदा के लिए दफन कर देने वाला अपना शक्ति प्रदर्शन था।

जनरल नील ने विद्रोह के दमनार्थ कोलकाता से बनारस और इलाहाबाद आते हुए मार्ग में आए हजारों निरीह स्त्री पुरुषों और बच्चों का कत्ल कराया बिना यह देखे कि क्या उनका विद्रोह से कोई सम्बन्ध था? ऐसा ही झाँसी, लखनऊ और अन्यत्र भी किया गया। रस्सियों से बाँधकर गोली मार देना, फाँसी और सूली चढ़ाना सामान्य सी सजाएँ थीं।

इस सब के उपरांत स्वातंत्र्य भावना दब अवश्य गई पर मरी नहीं, मर भी नहीं सकती थी क्योंकि स्वातंत्र्य भाव प्राणी मात्र में प्रकृति प्रदत्त होने से सहज सुलभ है। कांग्रेस की स्थापना के पहले सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के नेतृत्व में १८७६ में स्थापित 'इंडियन एसोसिएशन' ऐसा संगठन था जिसने राष्ट्रीय आधार पर अपना कार्य किया। राष्ट्रीय जनमत का निर्माण करना, राजनैतिक हितों के लिए भारतीयों में ऐक्य स्थापना और हिन्दू मुस्लिम मैत्री जैसे इसके लक्ष्य थे। इसके लिए उसने भारत में प्रथम बार जन जागरण, प्रदर्शन और सभाओं के माध्यम से असंतोष प्रकट करने और ब्रिटेन में भारतीय हित में वातावरण तैयार करने के लिए पर्याप्त कार्य किया। महाजन सभा मद्रास १८८४ और प्रेसीडेंसी एसोसिएशन १८८५ कांग्रेस के जन्म से पूर्व राष्ट्रीय आधार

पर सक्रिय थीं।

दिसम्बर १८८५ के अन्तिम सप्ताह में एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज अधिकारी ए.ओ. ह्यूम ने बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना की। यह ध्यातव्य है कि इंडियन एसोसिएशन सहित पूर्ववर्ती संस्थाओं और कांग्रेस में से किसी का भी लक्ष्य स्वातंत्र्य की प्राप्ति नहीं था। कांग्रेस की स्थापना के पीछे उद्देश्य क्या थे इस बात पर मतभेद होते हुए भी इस एक बात में सब सहमत हैं कि कांग्रेस की स्थापना में ह्यूम का उद्देश्य भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा था। इसके साथ हमें एक और भी उद्देश्य स्पष्ट दिखाई देता है- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को उग्रवादियों के नेतृत्व में जाने से रोकना। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी निःसंदेह उस समय उग्रवादी विचारों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे और इसके लिए इंडियन एसोसिएशन का राष्ट्रीय अधिवेशन बुलाया करते थे। उसके बढ़ते प्रभाव को समाप्त कर उसे हजम कर जाना भी इसका लक्ष्य था इसी कारण इंडियन एसोसिएशन का दूसरा राष्ट्रीय सम्मेलन जब कलकत्ता में बुलाया गया ठीक उसी वर्ष उन्हीं दिनों में अखिल भाारतीय कांग्रेस का अधिवेशन बम्बई में बुलाया गया।

जैसा पूर्व में लिख चुके हैं कांग्रेस सहित किसी भी तात्कालिक राष्ट्रीय संगठन का लक्ष्य स्वाधीनता प्राप्ति नहीं था। कांग्रेस की स्थापना हुई १८८५ में। उसने पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव स्वीकार किया १९२९ में। और भारत छोड़ो आन्दोलन चलाया १९४२ में। १९२९ तक कांग्रेस प्रस्ताव पास करने और विरोध प्रदर्शन करने वाली संस्था ही बनी रही। उस समय का चिन्तन प्रवाह किस ओर था यह जानने के लिए १८८५ में कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के सभापति उमेश चन्द्र बनर्जी के अध्यक्षीय भाषण का समापन अंश देखिये- 'ग्रेट ब्रिटेन ने हमें शांति और व्यवस्था दी है, उसने हमें रेल दी है और सबसे बढ़कर शिक्षा का अमूल्य वरदान दिया है पर अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। यूरोप में शासन के सम्बन्ध में जो विचार वर्तमान समय में प्रचलित हैं, यदि भारतीय लोग उनके अनुसार अपने देश में शासन के संचालन की इच्छा करें तो यह बात ब्रिटिश सरकार के प्रति उनकी भक्ति भावना में किसी प्रकार बाधक नहीं होगी। भारतीयों की केवल यही आकांक्षा है कि सरकार के आधार को और विस्तृत किया जाये। और जनता का उसमें समुचित हाथ हो।' इसमें यूरोपीय ढंग का शासन और उचित जन प्रतिनिधित्व से अधिक कोई चाह नहीं है। उस युग में कांग्रेस के अधिवेशनों में महारानी विक्टोरिया के जयकारे तथा पश्चात्वर्ती सम्राट जार्ज पंचम के दीर्घ जीवन के गीत गूँजते थे (आप्त राष्ट्र पुरुष ऋषि दयानन्द-क्षितीश वेदालंकार) कवि और साहित्यकार जिन पर जनता को जगाने का भार होता है, उस युग में गौरांग प्रभुओं की अतिरंजित प्रशंसा में ही स्वयं को धन्य मान रहे थे। बानगी देखिये, महारानी विक्टोरिया को लक्ष्य कर किसी कवि ने लिखा था-

जार्ज पंचम के दिल्ली दरबार के अवसर पर श्रीधर पाठक ने हिन्दू देवी देवताओं की तर्ज पर जार्ज वन्दना लिखी- प्रथम पद ही देखें-

जय जय पंचम जार्ज आर्ज अबनीस हमारे।
जयति सेत कुल केतु जयति इंग्लैण्ड उज्यारे।
जयति मनुज कुल दया द्रवित दुखियन दुःख भंजन।
जय भारत निज प्रजा प्रनय भाजन जन रंजन।
जय ब्रिटिश पुरातन वीरता विदित हनोवर वंस धर।
जय विक्टोर्या प्रिय तनुज श्री ऐडवर्ड नृप तनय वर।।

पूरी वन्दना में घोर चाटुकारिता भरी पड़ी है। यहाँ बस दो पंक्तियाँ और-

जय सुरथल सम भूतल कियौ सकल सुलभ सम्पत्ति भरित,
जय जलपति थलपति व्योमपति जयति सोम सुरपति चरित।

इस स्थिति में यह स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि किस दिव्यात्मा ने अपने अन्तःस्थल में स्वातंत्र्य स्वप्न को देखा जो १९४७ में जाकर साकार हुआ। इस सबंध में महर्षि दयानन्द की निम्न पंक्तियाँ बहुत उद्धृत की जाती हैं:-

'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत मतान्तर के आग्रह से रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं होता है।' {सत्यार्थ प्रकाश

अष्टम समुल्लास} सत्यार्थ प्रकाश का यह द्वितीय संस्करण १८८४ में मुद्रित होकर निकला जो १२ सितम्बर १८८२ को प्रेस में दिया गया था।

इससे भी पहले अप्रैल १८७५ में प्रकाशित आर्याभिविनय द्वितीय प्रकाश ३१ वें मंत्र की व्याख्या में ऋषि दयानन्द लिखते हैं-

'अन्यदेशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।' चक्रवर्ती राज्य की चर्चा तो इस ग्रन्थ में स्थान-स्थान पर आती है। ज्ञातव्य है कि यह ग्रन्थ ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना का है। स्वराज्य का स्वप्न हम ऋषि दयानन्द के नेत्रों में इसके भी बहुत पहले अनुभव कर सकते हैं। १८६८ में वर्षा के प्रारम्भ में स्वामी जी कानपुर आए और लाला दरगाही लाल के भैरव घाट पर उतरे, धर्मोपदेश प्रारम्भ किया। यहाँ हलधर ओझा के साथ ३१ जुलाई १८६८ को मूर्तिपूजा पर उनका शास्त्रार्थ हुआ था। शास्त्रार्थ के कुछ दिन पूर्व स्वामी जी ने शोलएतूर मुद्रणालय से ही एक विज्ञापन संस्कृत में छपवाकर प्रचारित किया था जिसमें अपने मान्य ग्रन्थों और मान्यताओं को सत्याष्टक और विरुद्ध को गप्पाष्टक कह कर संक्षेप में स्वसिद्धान्त निरूपित किए जिसे सिद्ध करने के लिए वे प्राणप्रण से सन्नद्ध रहते थे। इस विज्ञापन में अष्टम सत्यम के अन्तिम भाग में ये शब्द हैं- 'स्वराज्य प्राप्तिः अष्टमं सत्यम्।' {पंडित लेखराम कृत जीवन चरित्र पृ. ५८८}

यह विज्ञापन १८६८ का होकर आर्य समाज की स्थापना से ७ साल पहले का है। उस समय जब किसी प्रकार का कोई संगठन उस लंगोटधारी अद्भुत संन्यासी का सहायक नहीं था, प्रसिद्ध सुधारवादी और राष्ट्रीय संगठनों का तब तक जन्म ही नहीं हुआ था, तब एक ईश्वर के सम्बल पर उस महामानव ने स्वराज्य का उद्घोष किया जो कि स्वयं १२ साल पूर्व हुई १८५७ की क्रान्ति के क्रूरदमन का साक्षात् प्रत्यक्ष द्रष्टा रहा था जिसकी थोड़ी चर्चा लेख के प्रारम्भ की की है।

मूर्तिपूजा से विमुखता के रूप में विचार स्वातंत्र्य का जो अंकुर मूलशंकर के मन में १४ साल की अवस्था में अंकुरित हुआ था जो आगे चलकर विभिन्न विधाओं में विकसित पल्लवित और पुष्पित हुआ उसकी एक शाखा स्वराज्य भी थी। १८६८ में प्रकट हुई महर्षि के हृदय में यह चिंगारी जीवन पर्यन्त धधकती रही। परतंत्रता के प्रति महर्षि के हृदय में कितनी वेदना थी इसके दिग्दर्शन के लिए मात्र एक उद्धरण सत्यार्थ प्रकाश से- 'अब अभाग्योदय से और आर्य्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्य्यावर्त्त में भी आर्य्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय, राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है, सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है।'

निष्कर्ष- स्वराज्य की वेदी पर बलिदान देने वाले असंख्य होताओं की शृंखला में स्वराज्य मंत्र के प्रथम दृष्टा और उद्गाता होने का गौरव महर्षि दयानन्द को प्राप्त है। क्या राष्ट्र चेताओं में सत्य को स्वीकार करने की प्रेरणा जागृत होगी ?

- गिरदौठा, नीचम
चलभाष- ०८९८९६१५३४२

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

२०१५ का शानदार कैलेण्डर

न्यास द्वारा प्रकाशित १०० रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला) ५० प्रतिशत डिस्काउन्ट के साथ मात्र ५० रुपये (मय २० रु. पैकिंग व डाक व्यय) में उपलब्ध। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया गया है।

भारत वर्ष ही आर्यों की मूल भूमि है

संदीप आर्य

नव भारत टाइम्स (मुम्बई) में सितम्बर २०१४ में एक खबर छपी 'भारत के अतीत के बारे में दिल्ली यूनिवर्सिटी इतिहास की किताबें नए सिरे से लिखने के एक प्रोजेक्ट पर काम करेगी। इतिहास की किताबों में लिखा हुआ है कि करीब ३५०० साल पहले विदेशी आर्यों के कबीले पहाड़ों को पार कर भारत आए।'

किन्तु यदि हम प्राचीनतम इतिहास व अन्य शास्त्रों को पढ़ें, पुराने दस्तावेजों व लेखों को खंगालें तो उक्त विदेशी धारणा गलत साबित हो जाएगी। यह बात तो सत्य ही है कि आर्य जाति ही भारत देश की प्राचीनतम मूल जाति थी। किन्तु अंग्रेजों की गलत नीतियों एवं शिक्षा प्रणाली के कारण उन्होंने हमारे इतिहास में अनेक मिथ्या जानकारियाँ लिख दीं तथा उन्होंने हमें हमारे ही देश में विदेशी बना दिया।

वेद विश्व का प्राचीनतम धार्मिक ग्रन्थ माना जाता है, जिनका दर्शन-प्रवचन भारत के ऋषियों द्वारा किया गया। ये ऋषि आर्यों के आदि पूर्वज माने जाते हैं अतः आर्य ही भारत के पूर्वज सिद्ध होते हैं। वेद में कहीं भी उल्लेख नहीं है कि हम विदेशी थे। वेद के बाद दुनिया का प्राचीनतम ग्रन्थ मनु महाराज द्वारा रचित मनुस्मृति है उसमें लिखा है-

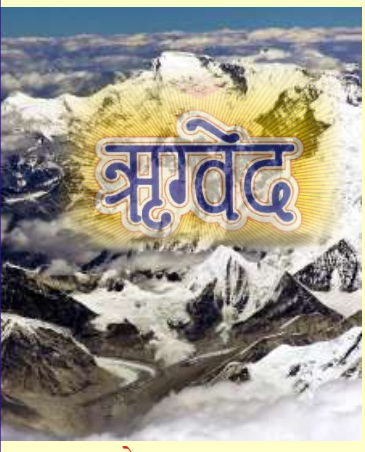

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः,
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

इसका भावार्थ यह हुआ कि प्राचीन काल में इसी आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न विद्वानों से समस्त विश्व के लोग शिक्षा व ज्ञान प्राप्त किया करते थे। आर्यों के रहने वाले इस देश को आर्यावर्त्त कहकर पुकारा जाता था इस प्रकार आर्य इस भूमि के मूल निवासी हुए।

वाल्मीकि रामायण का रचनाकाल कई हजार वर्ष पूर्व का माना जाता है यह संस्कृत का महाकाव्य भी है। आर्यों की मूल भाषा संस्कृत थी, अतः यह ग्रन्थ आर्यों का ऐतिहासिक ग्रन्थ हुआ। इस दृष्टिकोण से भी आर्यों को ही देश की मौलिक नागरिकता प्राप्त होती है। रामायण में वर्णित सभी नगर व प्रान्त भारत के ही हैं, इतर नहीं। रामायण में राम ने कई बार लक्ष्मण के लिए 'आर्य' शब्द का प्रयोग किया। स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने अपनी पुस्तक 'हिन्दुत्व' में लिखा है- 'महान् प्रतापी राजा राम ने अपनी विजय पताका हिमगिरि से महासागर तक फहराई तथा उन्होंने समस्त भारत में अपना सार्वभौम राज्य स्थापित किया।'

महाभारत काल जो कि ५००० वर्ष पुराना माना जाता है, उस महाभारत युद्ध में भारत की ही भौगोलिक सीमाओं का वर्णन आता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी पुस्तक 'सत्यार्थ-प्रकाश' में लिखा है कि उस महाभारत काल में चीन, अमेरिका, योरोप, यूनान, ईरान आदि देशों के राजाओं ने यहाँ आकर राजसूय यज्ञ में भाग लिया। वे लिखते हैं कि स्वायम्भुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त भारत में आर्यों का ही चक्रवर्ती राज्य रहा। मैत्रेयी उपनिषद् में भी लिखा है कि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त भारत में आर्यकुल के अनेक चक्रवर्ती राजा हुए। भारत के प्रथम राजा से लेकर भरत तक ने भारत पर राज्य किया इससे स्पष्ट है कि आर्यों का भारत पर राज हजारों लाखों वर्ष पुराना है। राजा भरत आर्यकुल के सुप्रसिद्ध राजा हुए, उसी के नाम से हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त से भारतवर्ष पड़ा। इनका राज्य काल महाभारत से भी अनेक वर्ष पूर्व का था, तो अंग्रेजों की धारणा कि आर्य लोग ३५०० वर्ष पूर्व भारत आए, गलत साबित हो जाती है क्योंकि महाभारत काल का ही समय आज से ५००० वर्ष पूर्व का है। किसी भी राज्य में जब वहाँ के लोग निवास करते हैं तो वे उस

राज्य का कोई नाम रखते हैं। यदि कोई भारत को द्रविड़ों का देश मानता है तो बतलाए कि द्रविड़ों ने भारत का क्या नाम रखा था? इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं है। द्रविड़ लोग इस देश का नाम आर्यावर्त्त अथवा भारतवर्ष तो नहीं रख सकते। यदि उन द्रविड़ों के देश का कोई अपना नाम नहीं, उनका कोई प्रमाणित इतिहास नहीं, कोई अपना धर्म ग्रन्थ नहीं, कोई साहित्य नहीं, तो किस आधार पर हम भारत को द्रविड़ों का देश मानने का दुराग्रह कर सकते हैं।

इसी प्रकार जब कोई मानव जाति अपना मूल देश छोड़कर अन्य देश में जाकर विस्थापित होती है, तो भी वह जाति अपने मूल देश को कभी नहीं भूलती, उसे सदा स्मरण करती है। पारसी लोग अपने देश फारस को छोड़कर भारत में आकर बसे, आज ८०० वर्ष बाद भी उन्हें अपना मूल देश स्मरण है। फिर आर्यों को अपने मूल देश का कोई इतिहास अवशेष क्यों नही? अतः आर्यों को विदेशी मानना, दिन को रात मानने के समान हठ करना है।

आर्यों की भाषा संस्कृत मानी जाती है। इस भाषा का प्रचलन लाखों वर्ष पुराना है। राम के युग से यह भाषा चली आ रही हैं। राम का युग लाखों वर्ष पुराना माना जाता है अतः आर्य भारत में लाखों वर्षों से रह रहे हैं। धीरे-धीरे संस्कृत भाषा से हिन्दी भाषा का जन्म हुआ फिर उससे अनेक भारतीय भाषाएँ पल्लवित एवं पुष्पित हुईं। अतः संस्कृत ही समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है।

मोहन जोदड़ो सभ्यता की खुदाई में मिली मोहर (सील) भी हमारे प्राचीनतम धार्मिक ग्रन्थ ऋग्वेद के प्रथम अध्याय के १६४.२० मंत्र में वर्णित वृक्ष पर बैठे दो पक्षियों के दृश्य से हूबहू मेल खाती है, अतः सिद्ध होता है कि वैदिक सभ्यता मोहन जोदड़ो से पूर्व की सभ्यता है।

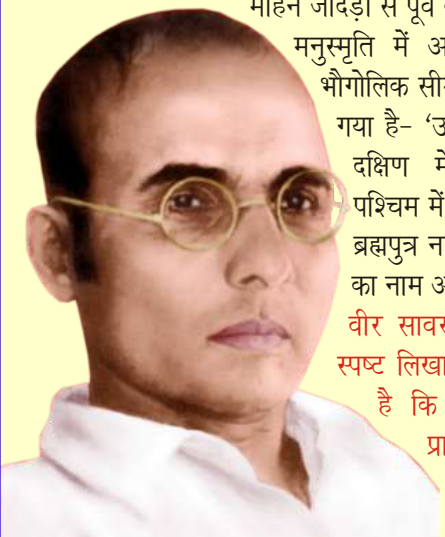

मनुस्मृति में आर्यावर्त्त (भारत) की भौगोलिक सीमाओं का वर्णन किया गया है- 'उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में विंध्याचल पर्वत, पश्चिम में सरस्वती तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी बहती है, उस देश का नाम आर्यावर्त्त है।

वीर सावरकर ने 'हिन्दुत्व' में स्पष्ट लिखा है- 'यह सुनिश्चित है कि आज के विश्व में प्राचीन मिश्र तथा बैवीलॉन की प्राचीन

सभ्यताएँ सुविख्यात् हैं। जब उनका नाम भी किसी ने नहीं सुना था तब भी पवित्र सिन्धु-सलिल की पावन कलकल ध्वनि के साथ अग्निहोत्र के यज्ञ-धूम्र की सुगन्ध प्रवाहित हुआ करती थी और यह महान् सिन्धु नदी तट वेदों के पावन घोष से गुंजित होता था, जिससे आर्य जनों के अन्तःकरण में आध्यात्मिकता की पुनीत ज्योति प्रज्ज्वलित होती थी।'

भारतीय ही नहीं, कई पाश्चात्य विद्वान् भी भारत को ही आर्यों की मूल भूमि मानते हैं। १९७५ में ऑक्सफोर्ड में छपी पुस्तक 'द अर्ली आर्यन' में टी बुरो ने स्पष्ट किया है- 'The Aryan invasion of India as mentioned is no recorded document and it can't be traced archeologically.'

अमेरिका के इतिहास वेत्ता डा. मिल्टन सिंगर कहते हैं- 'आर्य एवं द्रविड़ों के युद्ध का कोई वैज्ञानिक आधार नजर नहीं आता।' - (द्र. हिन्दू, मद्रास)

एक और इतिहासकार एलफिन्स्टन ने 'हिस्ट्री ऑफ इण्डिया' पुस्तक में लिखा है- 'वेद में, मनुस्मृति में अथवा अन्य किसी पौराणिक संस्कृत ग्रन्थ में आर्यों को भारत के अलावा और किसी देश का निवासी नहीं बताया गया है।'

भारत में अंग्रेजों ने अपना साम्राज्य सुदृढ़ करने हेतु उन्होंने यहाँ के स्वर्णिम इतिहास, महान् धार्मिक ग्रन्थों, सभ्यता, संस्कृति व प्राचीन शिक्षा पद्धति को नष्ट भ्रष्ट करने का पूरा प्रयास किया। इस कार्य में मैक्समूलर तथा मैकाले जैसे विद्वानों ने अपनी अहं भूमिका निभाई। उन्होंने यहाँ के गौरवशाली इतिहास को बदलने का भरसक प्रयास किया और वे इस कुकृत्य में सफल भी हुए।

किन्तु कहावत है कि सुबह का भूला यदि शाम को घर वापस आ जाए तो भी वह भूला नहीं कहलाता। आज आजादी के ६६ वर्षों के बाद भी यदि हमारी सरकार इस नेक कार्य को करने का संकल्प करती है तो भी वह बधाई की पात्र है। इससे हमारा खोया हुआ स्वर्णिम इतिहास पुनर्जीवित होगा और हमारा सोया हुआ स्वाभिमान पुनः जागृत होगा।

-मंत्री, वैदिक मिशन मुम्बई

श्रीमद् दयानन्द जयन्ती पर विशेष

स्वामी दयानन्द सर्वप्रथम हैं।

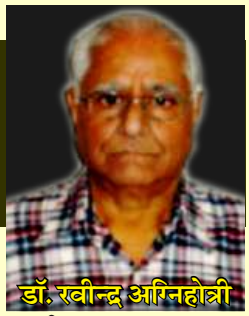

डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री

''गाँधी जी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह

– स्वतंत्रता सैनानी डॉ. पट्टाभि सीतारमैया''

स्वामी दयानन्द का जन्म जिस युग में हुआ था उसे हमारे इतिहास में सांस्कृतिक जागरण काल कहा जाता है। उस समय भारतीय समाज लगभग हर क्षेत्र में पतन के गहरे गर्त में धँसा पड़ा था। हजारों वर्ष बाद हमारे सौभाग्य से इस काल में एक के बाद एक अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने विभिन्न स्रोतों से शक्ति जुटाकर समाज के जीवन में ऊर्जा का संचार किया और इसे प्रगति के पथ पर अग्रसर किया। इसके लिए हम युग-युगान्तर तक उन सभी महापुरुषों के ऋणी रहेंगे। इन महापुरुषों में स्वामी दयानन्द सरस्वती का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि सामाजिक जीवन के अनेक क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें उन्होंने ही सबसे पहली बार जागरण का शंखनाद किया और हमारा मार्गदर्शन किया।

स्वामी दयानन्द की विशिष्टता

उस समय भारत में पश्चिमीकरण अपनी सीमा से आगे बढ़ चुका था। जिसका मुख्य अंग था ईसाइयत के प्रति आकर्षण। इसके दुष्परिणाम को समझने के लिए यह याद रखना आवश्यक है कि तब ईसाई धर्म के प्रचार और धर्मान्तरण का काम जोर-शोर से चल रहा था जिसके लिए मिशनरियाँ हिन्दुओं के धर्म, धर्म ग्रन्थों और सामाजिक प्रथाओं की सार्वजनिक रूप से अपमानजनक शब्दों में निन्दा करती थीं। मिशनरियों को परोक्ष रूप से सरकारी संरक्षण प्राप्त था। विडम्बना यह थी कि तत्कालीन सभी समाज सुधारक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त थे और उसी पश्चिमीकरण से प्रभावित थे, फिर चाहे वे बंगाल के राजा राममोहन राय, द्वारका नाथ टैगौर, देवेन्द्र नाथ टैगोर, केशवचन्द्र सेन आदि ब्रह्मसमाज के नेता हों या महाराष्ट्र के डॉ. आत्माराम पांडुरंग जैसे प्रार्थना समाज के नेता हों। समाज सुधार के उनके प्रयास ईसाइयत से प्रभावित थे और केवल हिन्दू समाज तक सीमित थे। यह भी स्मरणीय रहे कि इन्होंने अपने प्रचार की शुरुआत आवासों में गिने चुने लोगों की गोष्ठियाँ आयोजित करके की। बाद में जब प्रचार सामग्री, पत्रिकाएँ आदि छपने लगीं तब गोष्ठियों का आकार भी बढ़ने लगा, इसके बावजूद होती वे बंद कमरों में ही थीं। ये लोग किसी न किसी रूप में अंग्रेज सरकार के जुड़े हुए थे और जो काम कर रहे थे उससे ईसाइयत को बल मिल रहा था। अतः इन्हें अंग्रेज सरकार का अप्रत्यक्ष समर्थन भी प्राप्त था। यही कारण था कि हिन्दू समाज के धर्माचार्य इनसे खतरा महसूस करने के बावजूद इनका प्रत्यक्ष विरोध करने का साहस नहीं जुटा सके।

इसके विपरीत स्वामी दयानन्द पश्चिमीकरण से सर्वथा अछूते पारम्परिक भारतीयता की देन थे। वे संस्कृत माध्यम से शिक्षित, वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, दर्शनशास्त्रों, स्मृतियों, आदि के उद्भट विद्वान् थे परन्तु उस कूपमंडूकता और रूढ़िवादिता से कोसों दूर थे जो प्रायः संस्कृत वालों की पहचान मानी जाती है। समाज सुधार के साथ धर्म सुधार का भी कार्य करने वाले उस युग के एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी परिधि में केवल हिन्दुओं को नहीं, भारत में रहने वाले सभी धर्मावलम्बियों को अर्थात् पूरे भारतीय समाज को या कहें समस्त मानव समाज को समेट लिया और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' (सारे विश्व को 'आर्य' अर्थात् अच्छा इंसान बनाओ) के अभियान पर निकल पड़े। इसीलिए उन्होंने प्रचार कार्य बंद कमरों में गोष्ठियाँ आयोजित करके नहीं, सामान्य जनता के बीच उपदेश देकर शुरू किया जिसे विभिन्न धर्मों के धर्माचार्यों से संवाद, चर्चा

और शास्त्रार्थ करके आगे बढ़ाया। संरक्षण/समर्थन के नाम पर उनके साथ सरकार नहीं, अपना लगभग सवा छह फुट ऊँचा, ब्रह्मचर्य एवं योगाभ्यास से अत्यन्त पुष्ट, सुगठित, बलिष्ठ, कठोर तप से दीप्तिमान शरीर और ओजपूर्ण

मुखमंडल था जो प्रकाण्ड पांडित्य, तर्कशील बुद्धि, कुशाग्र प्रत्युत्पन्न मति, प्रगल्भ मधुर वाणी, प्राणिमात्र के लिए हृदय में प्रेम और करुणा, दृढ़ संकल्प, असीमित आत्मविश्वास, अदम्य साहस एवं अटूट ईश्वर विश्वास से भरा हुआ था। इस प्रकार केवल हिन्दू धर्माचार्यों से नहीं, विधर्मियों से भी संवाद स्थापित करने, उनके धर्मों/धर्मग्रन्थों की समीक्षा करने, शास्त्रार्थ की प्राचीन परम्परा को पुनर्जीवित करने और रूढ़िवादी-कट्टरपंथी लोगों के हर तरह के विरोध का अकेला सामना करने वाले वे उस युग के सर्वप्रथम और एकमात्र महापुरुष थे।

वेदों के उद्धारकर्ता

'मानव समाज में धर्म की प्रतिष्ठा वेदों से ही हुई है' कुछ लोग इसे विवादास्पद कह सकते हैं, पर यह निर्विवाद रूप से माना जाता है कि हिन्दू धर्म की आधारशिला वेद है। इसके बावजूद इन्हीं वेदों के सम्बन्ध में हिन्दू समाज में और आज के समय में अध्ययन करने वाले यूरोपीय विद्वानों में अनेक भ्रान्त धारणाओं ने घर बना लिया, जैसे वेद केवल यज्ञ करने एवं अन्य प्रकार के कर्मकाण्ड के लिए हैं, वेद केवल परमात्मा से प्रार्थना करने के लिए हैं, वेदों में केवल आध्यात्मिक ज्ञान है, वेद का अर्थ केवल संहिता (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) नहीं, (उनकी व्याख्या में लिखे गए) ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद् आदि भी वेद हैं, वेदों में इस देश का इतिहास और भूगोल है, उनमें यहाँ की नदियों का, राजाओं का, ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण है, वेद पुराने युग के ग्रन्थ हैं, इनकी उपयोगिता उस समय के लिए ही थी, आज के लिए नहीं, वेद गड़रियों के गीत हैं, वेद (सोमरस पीने वाले) मद्यपों का प्रलाप है, उनमें जादू-टोना-भूत, मारण-वशीकरण आदि का वर्णन है, वेद पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को है, स्त्रियों और शूद्रों के लिए तो वेदाध्ययन विशेष रूप से वर्जित है, वेद कलियुग के लिए नहीं हैं, वेद अब उपलब्ध ही नहीं क्योंकि शंखासुर उन्हें पाताल लोक ले गया, इत्यादि, इस प्रकार के सभी भ्रमों को दूर करने वाले सर्वप्रथम महापुरुष हैं महर्षि दयानन्द। उन्होंने वेद मंत्रों की व्याख्या करके यह स्पष्ट कर दिया है कि वेद सार्वजनीन हैं, अतः केवल हिन्दुओं के लिए नहीं, पूरी मानव जाति के लिए हैं, सार्वकालिक हैं, अतः उनकी उपयोगिता तब तक बनी रहेगी जब तक मानव जाति रहेगी, वे मात्र पूजापाठ के नहीं, मानव जीवन को भौतिक और आध्यात्मिक हर दृष्टि से सम्पन्न बनाने के सूत्र बताने वाले ग्रन्थ हैं।

इस युग के वे प्रथम विद्वान् हैं जिन्होंने यह सिद्ध किया कि वेद सब सत्य विद्याओं के भंडार हैं, विभिन्न प्रकार के ज्ञान-विज्ञान के मूल स्रोत हैं। भारत के गौरवशाली अतीत का आधार वेद और वैदिक साहित्य ही है। इन्हीं से भारत में और फिर यहाँ से विश्व में विभिन्न प्रकार का ज्ञान-विज्ञान फैला, और अभी भी इन ग्रन्थों में असीम संभावनाएँ छिपी हुई हैं। वेदों में विभिन्न प्रकार के ज्ञान विज्ञान (जैसे- समाज व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, राजनीति, शिल्प, सूर्य-पृथ्वी आदि का परिभ्रमण, गुरुत्वाकर्षण, सृष्टिविद्या, गणितविद्या, वायुमंडल के भेद, जल और आकाश में तीव्र गति से चलने वाले यान आदि) से संबंधित कतिपय वेदमंत्र प्रस्तुत करके उन्होंने शंकाग्रस्त लोगों/विरोधियों को चकित कर दिया। उन्होंने बताया कि पश्चिमी देशों में विमान और प्रोद्योगिकी की जो खोजें आज हुई हैं, वैसी और उनसे भी उच्चतर अनेक खोजें भारत में भी पहले हो चुकी हैं। महाभारत में वर्णित अस्त्र-शस्त्र इसके उदाहरण हैं। महाभारत युद्ध में इतना विनाश हुआ कि उसके पश्चात् इस देश का हर क्षेत्र में पराभव होता चला गया और वे खोजें भी विलीन होती चली गईं।

देश के हजारों वर्ष के इतिहास मे वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने वेदों की व्याख्या लोकभाषा हिन्दी में कर उन्हें सामान्य व्यक्ति तक के लिए सुलभ बना दिया। **क्रमशः .....**

सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार
१३८ एम् आई जी, पल्लवपुरम फेज़- 2, मेरठ-२५०११०

श्री राजीव दीक्षित
(स्मृति शेष)

प्रचार का चक्कर

आपसे मेरी एक विनती है कि आप Educated Idiot मत बनिए, ये विदेशी कंपनियों के विज्ञापन से प्रभावित हो कर कुछ भी मत खरीदिये और मेरी एक बात हमेशा याद रखियेगा कि जिस वस्तु का जितना विज्ञापन होता है, उसकी क्वालिटी उतनी ही खराब होती है और जिस वस्तु की क्वालिटी जितनी अच्छी होती है उसका विज्ञापन उतना कम होता है।

गाय के घी का विज्ञापन नहीं करना पड़ता, वो बिना विज्ञापन के बिकता है क्योंकि उसमें क्वालिटी है लेकिन डालडा का, रिफाइन तेल का विज्ञापन बार-बार करना पड़ता है क्योंकि क्वालिटी उसमें नहीं है।

माँ के हाथ की बनाई हुई रोटी का विज्ञापन नहीं करना पड़ता लेकिन कारखानों में बनी पावरोटी और डबल रोटी बिना विज्ञापन के नहीं बिकती । पिज्जा का, बर्गर का, मैगी का बार-बार विज्ञापन करना पड़ता है। गन्ने का रस, मौसमी का रस, नारंगी का रस, सेव का रस बिना विज्ञापन के बिकता है लेकिन पेप्सी और कोका कोला का विज्ञापन बार-बार करना पड़ता है, क्योंकि क्वालिटी शून्य है।

कोलगेट, पेप्सोडेंट, क्लोज-अप का प्रचार बार-बार करना पड़ता है क्योंकि जहर है और दातुन बिना प्रचार के बिकता है क्योंकि बेस्ट क्वालिटी है।

मिट्टी के घड़े का विज्ञापन नहीं करना पड़ता क्योंकि पानी सबसे शुद्ध उसी में रहता है लेकिन रेफ्रिजरेटर बार-बार विज्ञापन करके ही बेचना पड़ता है, क्योंकि वो जहर (क्लोरो, फ्लोरो, कार्बन) छोड़ता है। माइक्रोवेव ओवन बिना विज्ञापन के नहीं बिकता और मिट्टी का चूल्हा घर-घर में बनता है और लोग इस्तेमाल करते हैं।

ऐसे बहुत से उदहारण हैं, तो आप से विनती है कि प्रचार देख के कोई वस्तु मत खरीदिये। और सरकार को बार-बार दोष देना बंद करिए। ऐसा लगता है कि सब की सब सरकारों को धृतराष्ट्र की आत्मा ने लील लिया है, क्या पक्ष, क्या विपक्ष, सब का एक ही हाल है। पिछले बीस सालों में सभी पार्टियों ने इस देश पर शासन किया है, किसको अच्छा कहूँ ? धृतराष्ट्र तो अंधा था, ये तो आँखें रहते हुए अंधे हैं, सबों ने सत्ता का मोह पाल रखा है, देश और जनता की फिक्र किसे है? इसलिए पार्टियों पर भरोसा करना छोड़िये, अपने पर भरोसा करना सीखिए। जब सरकारें राष्ट्रविरोधी काम करना शुरू कर दें, सरकारें सिर्फ स्वार्थ और सत्ता में डूब कर काम करना शुरू कर दें तो राष्ट्र के लोगों को उठना ही होगा। आप पूछेंगे कि हम क्या करें? सरकार इन सामानों पर पाबन्दी नहीं लगाती तो कम से कम आप तो पाबन्दी लगा दीजिये, आप तो बंद कर दीजिये इन सामानों को अपने घर में आने से, ये तो आपके अधिकार क्षेत्र में है? इसके लिए तो प्रधानमंत्री से पूछने की जरूरत नहीं है कि आपके घर में ये जहर युक्त सामान आये, आप अपने घर के प्रधानमंत्री हैं, आप अपने घर का फैसला कीजिये और आपके घर में ये फैसला होना ही चाहिए।

> **"भारत में लाखों छोटे-छोटे स्वदेशी उद्योग हैं जो विदेशी कम्पनियों से टक्कर ले रहें हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि उनका मनोबल बढ़ावें और उनके गुणवत्ता वाले स्वदेशी सामानों को प्राथमिकता दें।"**
> - राजीव दीक्षित

भारत के लोग दो काम बहुत अच्छा करते हैं, एक तो ताली बजाना, अगर ये ताली बजाने की आदत नहीं होती तो रोबर्ट क्लाइव के रास्ते अंग्रेज इस देश में १७५७ में अपनी सत्ता स्थापित नहीं कर पाते। रोबर्ट क्लाइव ने अपनी डायरी में ये बात लिखी है कि 'भारत के लोग अगर ताली बजाने की जगह पत्थर उठा के मारे होते तो भारत में अंग्रेजों का शासन १७५७ में ही खत्म हो गया होता', और दूसरा, नारा बहुत अच्छा लगाते हैं 'भारत माता की जय', लेकिन काम करते हैं उल्टा। अगर आप सचमुच भारत माता की जय चाहते हैं तो अपने रहन-सहन में भारतीय बनिए और दूसरे भारतीयों से इस बारे में कहना शुरू कीजिये क्योंकि कहने में बहुत शक्ति होती है। हमारे देश में शब्दों को ब्रह्म माना जाता है। शब्दों का इस्तेमाल कर के ही भगवान श्रीकृष्ण ने कायर अर्जुन को लड़ने के लिए तैयार कर दिया था। गीता क्या है? गीता भगवान श्रीकृष्ण के मुँह से बोले गए कुछ शब्द हैं और शब्द ही थे जिनका प्रयोग करके हमारे राजाओं ने अपने सैनिकों को प्रोत्साहित किया और कई बड़े युद्ध जीते। तो आप इस लेख को पढ़कर सिर्फ ताली मत बजाइए, आप सरकारी भोंपुओं और मीडिया वाले भोपुओं से ज्यादा इन बातों का प्रचार-प्रसार कीजिये। बहुप्रचारित विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार करिए क्योंकि दुःख हमें है, आम भारतीय को। जय हिंद

आर्य जगत् के समाचार

आर्य समाज, सूरसागर, जोधपुर का ६० वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, सूरसागर का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जयनारायण जी सोलंकी गेंवा, गिरीश लूणा,पार्षद, जगदीश जी सांखला, रणवीर सिंह परिहार रहे। इस अवसर पर पंडित भरत लाल शास्त्री (हांसी), पंडित संदीप आर्य भजन सम्राट, पंडित रामनारायण शास्त्री, वैदिक प्रवर, जोधपुर व पंडित रामनिवास गुणग्राहक जोधपुर ने अपने विचार रखे। - किशन गहलोत, प्रधान आर्य समाज

आर्य समाज मंदिर, भटार, सूरत द्वारा भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव मनाया गया

आर्य समाज मंदिर, भटार (सूरत) द्वारा दिनांक १३ से १८ जनवरी २०१५ तक भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव मनाया गया साथ ही प्रातः एवं सायं योग कक्षाओं एवं पंचकुण्डीय यज्ञ का आयोजन भी किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. सोमदेव शास्त्री ने सभी सत्रों में प्रेरणास्पद उद्‌बोधन प्रदान किए। दिनांक १७ व १८ जनवरी २०१५ को सायंकाल 'सत्यार्थ प्रकाश संगोष्ठी' का आयोजन किया गया जिसमें गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द अग्रवाल (उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली), मंत्री श्री हंसमुख भाई पटेल, कार्यक्रम के संयोजक योगाचार्य श्री उमाकान्त जी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने उद्‌बोधन प्रदान किया। डॉ. अमृतलाल तापड़िया-संयुक्त मंत्री, न्यास तथा श्री भँवरलाल गर्ग-कार्यालय मंत्री, न्यास ने भी भाग लिया।

आर्य समाज, नरवाना में आर्य महासम्मेलन का आयोजन

आर्य समाज, नरवाना के तत्वावधान में २३ दिसम्बर २०१४ को आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने की। इस अवसर पर स्वामी रामवेश जी प्रधान, नशाबंदी परिषद्, बहिन पूनम आर्या व प्रवेश आर्या, संचालिका 'बेटी बचाओ अभियान' एवं ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र आर्य ने भी उद्‌बोधन प्रदान किया।

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज, कृष्णपोल बाजार,जयपुर के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष का दायित्व क्रमशः श्री ओ.पी.वर्मा, श्री कमलेश शर्मा एवं श्री दिनेश चन्द्र शर्मा को सौंपा गया। डॉ. मदन मोहन जावलिया को वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गई। सभी पदाधिकारियों को न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री ओ.पी.वर्मा

श्री कमलेश शर्मा

शोक समाचार

आर्य समाज को एक और आघात

गत वर्ष अनेक आर्य विद्वान्, नेता, मनीषी हमारे बीच में से चले गए। इस नये वर्ष में संपूर्ण आर्य जगत् को भीषण आघात लगा जब प्रसिद्ध विद्वान् तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान ब्रह्मचारी राजसिंह जी आर्य ने इस नश्वर संसार से विदा ली। आर्य समाज में ब्रह्मचारी जी का योगदान अमूल्य रहा है। निःसंदेह यह आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्य परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें और हमें भी प्रेरणा प्रदान करें ताकि आचार्य राजसिंह जी के बताये मार्ग पर चलकर आर्य जगत् की सतत् सेवा करते रहें।

- अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

आर्य समाज, सनवाड़, जिला उदयपुर के प्रधान डॉ. एम.पी.सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती गौरादेवी का निधन २५.११.१४ को मात्र ४७ साल की आयु में हो गया। वे बहुत ही सात्विक विचारधारा एवं धार्मिक भावना वाली थीं। न्यास के सभी सदस्य डॉ. एम.पी.सिंह की वेदना में उनके साथ हैं। हम सभी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवारीजनों को धैर्य प्रदान करें। - भवानीदास आर्य, मंत्री- न्यास, उदयपुर

श्री नरेश चौहान सुपुत्र श्री तेजपाल सिंह चौहान आर्य का देहावसान १६ नवम्बर २०१४ को हो गया। वे कुछ माह से अस्वस्थ चल रहे थे। प्रभु की यही इच्छा थी। वे अपने पीछे पुत्र मोहनीश, पुत्री ज्योति एवं धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी को छोड़ गए। प्रभु इनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। - वल्लभगढ़/फरीदाबाद के मित्र व साथी।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ (विजयनगर), श्री हुक्म सिंह चौहान (विजयनगर), श्री सुरेन्द्र प्रसाद बरनवाल, नवादा (बिहार), श्री जयन्त कुमार, नवादा (बिहार), श्री गगन सिंह भाटी (बीकानेर), श्री गौरीशंकर भाटी (बीकानेर), श्री रविन्द्र सिंह राठौड़ (बीकानेर), श्री कैलाश सुथार (बीकानेर), श्री योगेश्वर प्रसाद (बीकानेर), श्री राजेन्द्र (बीकानेर)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

नवलखा महल, गुलाबबाग स्थित आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा दर्शनीय एवं पठनीय है। विशेषकर विद्यार्थियों को यहाँ अवश्य आना चाहिए। यह स्थल पवित्र भूमि है जहाँ पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने साढ़े छः मास निवास किया था। इस स्थल को प्रणाम करने का अवसर प्राप्त कर मैं अपने जीवन को धन्य समझता हूँ। और कामना करता हूँ कि मेरे जैसे कोटी-कोटी भारतीयों को यह सौभाग्य प्राप्त हो।

- गणेश शंकर त्रिपाठी, सेवानिवृत्त आइ. ए. एस., नोएडा

समाचार

नि:शुल्क होम्योपेथी चिकित्सा व परामर्श शिविर सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से आयोजित नि:शुल्क होम्योपेथी चिकित्सा व परामर्श शिविर दिनांक: २५.१२.२०१४ को आयोजित किया गया। शिविर में १३० रोगियों को चिकित्सकीय परामर्श डॉ. प्रीतेश मेनारिया, डॉ. संध्या शर्मा, श्री जितेन्द्र डीरा एवं कपिल सोनी के द्वारा किया गया। बोडी मास टेस्ट नि:शुल्क उपलब्ध करवाया गया। आर्य समाज हिरण मगरी के प्रधान भँवर लाल आर्य, डॉ. अमृत लाल तापड़िया व श्री कृष्ण कुमार सोनी ने आगन्तुकों का स्वागत किया। आभार आर्य समाज हिरण मगरी की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने ज्ञापित किया। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया। शिविर में रामदयाल मेहरा, पी.एन. जायसवाल व मुकेश पाठक ने सहयोग किया।

- रामदयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

वेद विदुषी आचार्या सूर्यादेवी गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से सम्मानित

'गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार' के रजत वर्ष पर इलाहाबाद संग्रहालय में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसमें वेद विदुषी आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी को २१०००/- रुपये नकद, स्मृति चिह्न तथा अंगवस्त्र देकर पूर्व न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय ने सम्मानित किया। यह पुरस्कार सूर्या देवी कृत 'ब्रह्मवेद है अर्थवेद' पर दिया गया। माननीय न्यायमूर्ति ने हर्ष प्रकट करते हुए उनकी विद्वता की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि समिति द्वारा विद्वानों को सम्मानित करना वैदिक साहित्य के उन्नयन की दिशा में अत्यन्त उत्तम कार्य है।

- राधे मोहन, प्रधान

अन्तर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन, भूटान में कृष्ण कुमार यादव सर्वोच्च 'परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान' से सम्मानित

हिंदी साहित्य और ब्लॉग पर संस्मरणात्मक सृजन के लिए चर्चित ब्लॉगर व साहित्यकार एवं सम्प्रति इलाहाबाद परिक्षेत्र के निदेशक डाक सेवाएँ श्री कृष्ण कुमार यादव को १५-१८ जनवरी २०१५ के दौरान भूटान की राजधानी थिम्पू में आयोजित चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन में ब्लॉगिंग हेतु सर्वोच्च 'परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। श्री यादव को उक्त सम्मान भूटान चेंबर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्री के जनरल सेक्रेटरी श्री फूप शृंग एवं इंटरनेशनल स्कूल ऑफ भूटान तथा सार्क समिति ऑफ विमेन आर्गनाइजेशन की अध्यक्ष श्रीमती थिनले लम्हा द्वारा दिया गया। सम्मान के तहत २५,००० रुपये की धनराशि, सम्मान पत्र, प्रतीक चिह्न, श्रीफल और अंगवस्त्र देकर श्री कृष्ण कुमार यादव को सम्मानित किया गया। उक्त जानकारी सम्मलेन के संयोजक श्री रवीन्द्र प्रभात ने दी।

केन्द्रीय कारागृह-कोटा में वेदों का सेट भेंट किया

कोटा, ५ जनवरी। ईश्वरीय वाणी वेद हमें सकारात्मक सोच देती है। वेद हमें अच्छे विचार देता है, मानवीय गुणों का विकास वेद से होता है। वेद का स्वाध्याय करें। उक्त विचार मुख्य अतिथि के.के. कौल, पूर्णकालिक निदेशक डी.सी.एम. श्रीराम ने केन्द्रीय कारागृह कोटा में आर्यसमाज जिला सभा, कोटा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना कर समाजसेवा का मूलमंत्र दिया। आभार जिला मंत्री कैलाश बाहेती ने किया।

- अरविन्द पाण्डेय

उंखलिया में वैदिक सत्संग का कार्यक्रम सम्पन्न

निम्बाहेड़ा, समीपस्थ उंखलिया ग्राम में आर्य समाज निम्बाहेड़ा के तत्वावधान में वैदिक सत्संग व भजनोपदेश का पन्द्रह दिवसीय प्रचार कार्यक्रम मंगलवार को सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के संयोजक शिवलाल आंजना के अनुसार उंखलिया ग्राम के सांवलियाजी के मंदिर पर आयोजित समापन कार्यक्रम में पंडित भूपेन्द्रसिंह आर्य ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन को वेदानुकूल बताया। युवाओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि नशा पतन का मार्ग और जीवन अनमोल है अतः युवा अपना जीवन संभालें । पन्द्रह दिनों तक चले प्रचार कार्यक्रम के दौरान सेमलिया, चांदखेड़ा, ढोरिया, सरलाई, आवरीमाता आदि स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए। आभार प्रदान निम्बाहेड़ा आर्य समाज के प्रधान विक्रम आंजना ने किया।

आर्य समाज वड़ोदरा का वार्षिकोत्सव संपन्न

दिनांक २१ से २३ दिसंबर तक त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रथम दो दिनों में श्री फतेह सिंह अनाथाश्रम के प्रांगण में चतुर्वेद शतकम् परायण यज्ञ संपन्न हुआ। जिसके ब्रह्मा पद को चित्तौड़गढ़ के आचार्य श्री हरिश्चंद्र विद्यावाचस्पति जी ने सुशोभित किया। वेद पाठ में आर्यसमाज के पुरोहित श्री अंकित शास्त्री एवं श्री भावेश शास्त्री ने सहयोग किया। तीसरे दिन २३ दिसंबर को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के रूप में समापन समारोह में उन्हें याद किया गया। ओजस्वी वाणी के धनी आचार्य श्री हरिश्चंद्र जी ने तीनों दिन सारगर्भित प्रवचनों से वेदामृत का पान कराया। ऋषि लंगर के साथ वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ ।

भीलवाड़ा में २१ कुण्डीय यजुर्वेद परायण यज्ञ एवं वेद कथा

दिनांक २६ से २८ दिसम्बर २०१४ में आजाद चौक, भीलवाड़ा में श्री रामकृष्ण जी छाता द्वारा आर्य समाज, भीलवाड़ा के तत्वावधान में उक्त कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनन्द पुरुषार्थी ने इस अवसर पर आध्यात्मिक प्रवचनों से उपस्थित जन समुदाय को मंत्र मुग्ध किया। वहीं फरीदाबाद से आये भजनोपदेशक प्रदीप जी शास्त्री की प्रस्तुति भी सराहनीय रही। आयोजन की सफलता में आर्य समाज, भीलवाड़ा के प्रधान श्री विजय शर्मा, मंत्री श्री अशोक टोडावाल आदि का विशेष सहयोग रहा।

हलचल

पुस्तक विमोचन एवं वेद व्याख्यानमाला का आयोजन

२२ मार्च २०१५ को स्वर्गीय श्री हरिसिंह जी आर्य, स्वतन्त्रता सैनानी के जन्म दिवस पर 'सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार प्रसार न्यास', जयपुर द्वारा पुस्तक 'यज्ञ क्या? क्यों? कैसे?' का विमोचन एवं वेद व्याख्यानमाला का आयोजन किया जा रहा है। उक्त पुस्तक न्यास द्वारा ३००० की संख्या में निःशुल्क वितरित की जावेगी। जिनमें से दो हजार प्रतियाँ श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के माध्यम से स्वाध्यायशील आर्यों को निःशुल्क प्रेषित की जायेंगी। अधिकाधिक सहयोग की आकांक्षा है।

-ओ.पी.वर्मा, जयपुर

योग ध्यान साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम, ऊधमपुर) जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्य मुनि जी के सानिध्य में दिनांक ११ से १६ अप्रैल २०१५ तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नम्बर ०६४१६१०७७८, ०६४१६७६६६४६ पर संपर्क करें।

चाहिए पुरोहित एवं धर्म शिक्षक

आर्य समाज,अकोला को एक पुरोहित की आवश्यकता है जो आर्य समाज द्वारा संचालित विद्यालय में धर्मशिक्षक का भी कार्य कर सके सुयोग्य व्यक्ति संपर्क करें। डॉ. मजुलता विद्यार्थी-09421830561, डॉ. दिलीप जी मानकर -09422863128

गुरुकुल हरिपुर (ओड़ीसा) का पंचम वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल हरिपुर (ओड़ीसा) का पंचम वार्षिक महोत्सव ३०,३१ जनवरी एवं १ फरवरी २०१५ को देश के शीर्षस्थ विद्वानों, साधु सन्तों तथा आर्यजनों की पावन उपस्थिति में अनेक महत्वपूर्ण प्रेरक एवं ऐतिहासिक कार्यक्रमों से युक्त होने जा रहा है। इस अवसर पर ध्वजारोहण आर्यश्रेष्ठी श्री जयदेव आर्य के करकमलों द्वारा सम्पन्न होगा। इस अवसर पर सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण जी आर्य, कुलपति गुरुकुल हरिपुर, पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती संस्थापक गुरुकुल आमसेना, श्री बसन्त कुमार पण्डा विधायक नुवापड़ा, श्री खुशहाल चन्द आर्य, कोलकाता, श्री जयप्रकाश अग्रवाल, झरिया-झारखण्ड, श्री कैलाश कर्मठ, भजनोपदेशक, कोलकाता, श्री आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, स्वामी सुधानन्द सरस्वती, राउरकेला आदि उपस्थित रहेंगे।

- डॉ.सुदर्शन देव आचार्य

स्वामी श्रद्धानन्द को भारत रत्न देने की मांग

दिनांक २५.१२.१४ को आर्य समाज, अरावली विहार, कालाकुँआ, अलवर के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह के अवसर पर स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उकेरित करते हुए संपूर्ण सभा ने समवेत स्वर में स्वामी श्रद्धानन्द जी को भारत रत्न देने की माँग की। इस अवसर पर पंडित अमरमुनि महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान, एडवोकेट जगदीश प्रसाद गुप्ता, यू.आई.टी., अलवर के पूर्व चेयरमैन श्री प्रदीप आर्य, डॉ. रविकान्त राणा, श्री अशोक आर्य, डॉ. राजेन्द्र कुमार आदि विशिष्ठजन उपस्थित थे। सभी का धन्यवाद आर्य समाज के प्रधान श्री कृष्णलाल अदलखा ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री धर्मवीर आर्य ने किया।

प्रतिस्वर

प्रिय श्री अशोक जी, सत्यार्थ सौरभ नवम्बर अंक २०१४ मेरे सामने है। 'जहालत की इंतहा' और 'वैवाहिक जीवन' दोनों ही आपके लेख बहुत उत्तम कोटि के और सामयिक हैं। हम समाज के साप्ताहिक सत्संगों में इन्हें सुनाते हैं। सत्यार्थ सौरभ के पुराने अंक भिजवाने का हम अनुरोध करते हैं।

- नानक चन्द लोहिया

सत्यार्थ सौरभ एक उत्तम तथा अनुपम पत्रिका है। महर्षि के सिद्धान्तों व विचारों को प्रकट करने वाली, सत्यार्थ प्रकाश की बातों को अपने आंचल में संजोए हुए पठनीय व सारगर्भित पत्रिका है। जिसमें सत्य सिद्धान्तों का निरूपण है। सभी लेख सारगर्भित एवं सत्य ज्ञान विज्ञान से ओतप्रोत हैं। इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

- कर्मवीर आर्य ,यमुनानगर

गत दिनों यात्रा में पवित्र गरिमामय गौरवशाली नवलखा महल, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास में ठहरने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अत्यन्त सुन्दर व उत्तम कोटि की व्यवस्था के साथ-साथ स्नेह भाव भी प्राप्त हुए। इतने महान् कार्यों को बड़ी कुशलता पूर्वक करने के लिए न्यास के अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं। आपकी सत्यार्थ सौरभ पत्रिका उच्च कोटि की है। इसके अतिरिक्त प्रचार के जो विभिन्न प्रकार के उपाय किए जा रहे हैं वे सराहनीय हैं।

- रणजीत आर्य, मंत्री आर्य समाज, बिसवां सीतापुर

डॉ. सुन्दरलाल कथुरिया अमृत महोत्सव मनाया जायेगा।

प्रखर वैदिक चिन्तक उत्कृष्ट प्रवचनकर्ता अनेक वैदिक ग्रन्थों के यशस्वी लेखक, कई संस्थाओं के संस्थापक अध्यक्ष, समर्पित आर्य समाजी एवं भावनगर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर, अध्यक्ष रहे डॉ. सुन्दरलाल कथुरिया, डीलिट् (जन्म तिथि १.७.१६४१) को उनके अमृत महोत्सव के अवसर पर भव्य अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जायेगा। डॉ. कथुरिया ने दिल्ली विश्वविद्यालय, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एवं भावनगर विश्वविद्यालय में ३८ वर्षों तक अध्यापन एवं अनुसंधान कार्य किया है। उनके साहित्यिक एवं आर्ष योगदान के कारण उन्हें ७० से अधिक पुरस्कारों/सम्मानों/सम्मानोपाधियों से विभूषित किया गया है।

- आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, नई दिल्ली

राष्ट्रीय स्पर्द्धा में गुरुकुल पोन्धा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

चतुर्थ के- कराटे, केम्फो, कुबुडो नेशनल चैम्पियनशिप १६-२१ दिसम्बर २०१४ में गुरुकुल पौन्धा देहरादून की टीम ने भाग लेकर ८ स्वर्ण, ७ रजत तथा कास्य पदक प्राप्त किए। पदक विजेताओं में नितिन आर्य, यशवर्द्धन आर्य, वेदमित्र आर्य, अन्वेष आर्य, अनित आर्य, सारांश आर्य, शुभम् आदि प्रमुख हैं। टीम के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को देख जजों ने निर्णय दिया कि मार्च २०१५ में थाइलैण्ड में आयोजित होने वाली इन्टरनेशल नानबूडो चैम्पियनशिप में गुरुकुल की टीम भाग लेगी।

गुरुकुल के आचार्यगण और छात्रों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई।

क्या ज्योतिषी उपभोक्ता संरक्षण कानून के दायरे में आते हैं?

जब मैंने ज्योतिष शास्त्र को विज्ञान बताने और ज्योतिषियों को परखने हेतु कुछ प्रयोगों पर पिछले कुछ लेख लिखे थे उस समय टिप्पणियों में तथा व्यक्तिगत ई-मेल में मुझे ज्योतिष समर्थकों के जो जवाब मिले थे उनमें से अधिकतर में ज्योतिष और चिकित्सा विज्ञान (मेडिकल साइंस) की तुलना करने की कोशिश की गई, मुझे लगातार यह बताया गया कि कोई भी विज्ञान पूरा नहीं होता, न ही डॉक्टरों द्वारा दी जाने वाली दवाईयाँ सुरक्षित होती हैं। इस तर्क के आधार पर समर्थकों का कहना था कि डॉक्टर भी गलती करते हैं, वे भी मरीज पर शोध करते रहते हैं, उनमें भी एकमत नहीं होता... आदि-आदि। वैसे तो इन दो बातों की तुलना करना ही सिरे से गलत है, क्योंकि चिकित्सा विज्ञान में लगातार शोध होते रहते हैं, तर्क-वितर्क होते हैं, बड़े-बड़े विद्वान् भी गलत साबित होते हैं, वे अपनी गलती सुधार भी करते हैं, किसी मरीज को चार डाक्टरों का एक पैनल देखेगा तो उनमें आपस में एकमत जल्दी से हो जायेगा, लेकिन ज्योतिष के साथ ऐसा कुछ भी नहीं है। यहाँ तो प्रश्न करते ही सामने वाले को नास्तिक, बेवकूफ, नालायक, विधर्मी आदि साबित करने की होड़ लग जायेगी।

उसी समय से मेरे दिमाग में एक प्रश्न लगातार घूम रहा है कि 'क्या ज्योतिषी भी उपभोक्ता संरक्षण कानून के अन्तर्गत आते हैं?' क्योंकि जब ज्योतिष समर्थक लगातार उसे विज्ञान कहते हैं और मेडिकल साइंस से तुलना करते हैं तब यह प्रश्न स्वाभाविक है कि जिस प्रकार डाक्टर और अस्पताल उपभोक्ता संरक्षण कानून के दायरे में आते हैं, उन पर मुकदमा चलाया जा सकता है, उनकी डिग्री छीनी जा सकती है, क्या ऐसा ज्योतिषी के साथ किया जा सकता है? इस सम्बन्ध में कानूनी स्थिति की जानकारी चाहूँगा। ज्योतिष नामक 'व्यवसाय' करने के लिये किसी को कोई डिग्री नहीं लेनी होती, किसी ज्योतिष महाविद्यालय (?) में पढ़ाई करने की आवश्यकता नहीं होती। अब मैं विद्वानों से जानना चाहता हूँ कि क्या भविष्यकथन गलत साबित होने पर किसी ज्योतिषी पर मुकदमा दायर किया जा सकता है? यदि हाँ, तो अगला प्रश्न उठता है कि कितने ज्योतिषी अपने यजमान को दक्षिणा की 'रसीद' देते हैं, जिसके बल पर केस उपभोक्ता अदालत में टिके? दक्षिणा के अलावा ज्योतिषी छाता, जूते, छड़ी, कपड़ा, गाय, जमीन, आदि दान करने को कहते हैं क्या उसकी रसीद देते हैं? और यदि उसका उत्तर है 'नहीं' तो फिर दूसरा प्रश्न खड़ा होता है कि- जब कोई व्यक्ति परिस्थितियों से परेशान हो जाता है तभी वह ज्योतिषी की शरण में जाता है। ऐसा माना जाता है कि ज्योतिषी उस बेचारे को मानसिक आधार देता है, और उसे समझा देता है कि आपका बुरा वक्त बस जाने ही वाला है, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान ज्योतिषी उसकी जेब भी काफी हल्की कर देता है। ऐसे में पहले से ही पीड़ित व्यक्ति चुपचाप यह आर्थिक फटका भी सहन कर लेता है। लगभग इन्हीं परिस्थितियों में वह डॉक्टर के पास जाता है और यदि उस चिकित्सक से दवा देने में या उपचार में या 'डायग्नोस' में गलती हो जाये तो उसे उपभोक्ता कानून के जरिये कोर्ट में घसीटने से बाज नहीं आता। फिर ज्योतिषी को भला क्यों छोड़ना चाहिये, क्या वे आसमान से उतरे हुए फरिश्ते हैं? या ज्योतिष किसी दैवीय कृपा से प्राप्त हुई कोई विद्या है, जिस पर प्रश्न उठाया ही नहीं जा सकता? सीधी सी बात तो यह है कि जहाँ दो व्यक्तियों या संस्था में पैसे का लेन-देन होता है, स्वतः ही वहाँ 'उपभोक्ता' और 'सेवा' का नियम लागू हो जाना चाहिये। यदि भविष्यकथन गलत हो जाये तो ज्योतिषी की गलती, लेकिन यदि तुक्के में भविष्यकथन सही बैठ जाये तो ज्योतिष विज्ञान महान् है, ऐसी बात ज्योतिषियों ने ही फैलाई है। यदि यजमान पर कोई संकट नहीं आया तो 'मैंने फलाँ उपाय बताया था, इसलिये विघ्न टल गया' और यदि फिर भी संकट आ ही गया तो 'मैंने तो पहले ही कहा था, कि तुम्हारे ग्रह खराब चल रहे हैं'....।

वर्तमान के तनावग्रस्त और आपाधापी भरे अनिश्चित जीवन में व्यक्ति को मानसिक आधार चाहिये होता है, जिसके जीवन

में जितनी अधिक अनिश्चितता होगी वह उतना ही ज्योतिष, वास्तु आदि बातों पर यकीन करेगा, जिसका साक्षात् उदाहरण हैं फिल्म स्टार (जिनकी किस्मत हर शुक्रवार को बदलती रहती है) और राजनेता जिसे अगले पाँच साल की चिंता पहले दिन से ही खाये जाती है, या फिर कोई सट्टेबाज व्यवसायी जो रोज-ब-रोज बड़े-बड़े दाँव लगाता है, ये सारे लोग सुख में भी ज्योतिषियों के चक्कर काटते नजर आते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी समस्या के हल का आसान रास्ता खोजता है। मन्दिर जाना, व्रत करना, ज्योतिषियों को कुंडली दिखाना जैसे सैकडों उपाय वह करता है, लेकिन तर्कबुद्धि, व्यावहारिक उपाय या वैज्ञानिक सोच से वह बचता है। फिर बात आती है विश्वास और श्रद्धा पर, लेकिन यही विश्वास और श्रद्धा जब खंडित होती है, और बार-बार होती है, तब भी उस व्यक्ति की आँखें नहीं खुलतीं बल्कि उसका अंधविश्वास बढ़ता ही जाता है, और ज्योतिषियों की चाँदी कटती रहती है। जिनके यहाँ पैसे की नदियाँ बह रही हैं, और ज्योतिष, न्यूमरोलाजी, वास्तु आदि जिनके लिये एक चोंचला और दिखावा मात्र है, उन्हें तो कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन एक सामान्य निम्न-मध्यमवर्गीय व्यक्ति जब ज्योतिषी के हाथों ठगा जाता है, तब क्या किया जा सकता है। इसलिये एक बार अन्त में पुनः मैं अपने प्रश्न दोहराना चाहूँगा और जनता की राय लेना चाहूँगा कि-

(१) क्या ज्योतिषी भी 'उपभोक्ता संरक्षण कानून' के अन्तर्गत आते हैं?

(२) यदि हाँ, तो वह उपभोक्ता किस प्रकार से कानूनी मदद ले सकता है? क्या वह धोखाधड़ी का केस लगा सकता है?

(३) और यदि नहीं, तो क्यों नहीं? जब डाक्टर, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, टेलीफोन, बिजली, अन्य कम्पनियाँ, आदि सभी जो पैसे लेकर सेवा देते हैं इसके दायरे में आते हैं तो ज्योतिषी क्यों नहीं?

साभार - सुरेश चिपलूणकर

सत्यार्थप्रकाश (मानक संस्करण) बाबत् विशेष सूचना

खेदपूर्वक सूचित किया जाता है कि न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश (मानक संस्करण) न्यास के स्टॉक में समाप्त हो गया है। अतः जिन सत्यार्थप्रकाश प्रेमियों ने हमें सत्यार्थप्रकाश भेजने हेतु आदेशित किया है उन्हें न भेज पाएँगे। क्षमाप्रार्थी हैं।

- सुरेश पाटोदी (व्यवस्थापक, न्यास)

विश्व विजयी शंखनाद है

वाणी के बवण्डर नहीं, तर्कणा की धार है।
सत्यार्थ प्रकाश वाण वेधक विचार है।।
चौदह सम्मुलास विश्व विजय शंखनाद है।
धर्म के बगीचे में ये दे रहा सुखाद है।
अविद्या पर वज्राघात, विद्या का प्रचार है।।
सत्यार्थ प्रकाश वाण वेधक विचार है।।
इसके प्रताप से पाखण्डों के गढ़ डोले हैं।
असत्य को भस्म करे, आग के ये गोले हैं।
इसके सम्मुख अज्ञानता रोती जार-जार है।।
सत्यार्थ प्रकाश वाण वेधक विचार है।।
'सत्यमेव जयते' सदा सत्य सिरमौर है।
इसके समान कोई दूजा नहीं और है।
धर्मध्वजी पोपों बीच मचा हाहाकार है।।
सत्यार्थ प्रकाश वाण वेधक विचार है।।
तम हुआ तार-तार सत्य के प्रकाश से।
खण्डित हो गया अधर्म वेद के विकास से।
सत्य पर चले तो 'संजय' होती नहीं हार है।
सत्यार्थ प्रकाश वाण वेधक विचार है।।

- क्रान्तिकारी कवि एवं उपदेशक, पटना, मो. ०९००६१६६१६८

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली

आश्रम व्यवस्था में समग्र सुख

वैदिक संस्कृति के अनुसार मानव जीवन को शतायु बतलाया गया है। यजुर्वेद में **'अदीनाः स्याम शरदः शतम्'** (यजु. ३६/२४) तथा **'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः'** (यजु. ४०/२) की कामना की गई है। इन सौ वर्ष की यात्रा की गति, एक ही शक्ति तथा एक ही उत्साह से नहीं हो सकती, इसलिए प्राचीन ऋषियों ने मानव जीवन की इस यात्रा को चार भागों में विभक्त करके २५-२५ वर्ष के चार पड़ाव डाल दिये हैं; इन पड़ावों के नाम हैं- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। यही आश्रम-व्यवस्था कहलाती है।

इस व्यवस्था में श्रमहीन एवं निकम्मे रहने की कहीं भी कोई गुंजाइश नहीं है। आश्रम पद का शाब्दिक अर्थ है **'आ समन्तात श्रमो यत्र स आश्रमः'**, अथवा **'आश्रयन्ति यत्र स आश्रमः'**, अर्थात् जहाँ सब प्रकार से श्रम किया जाता है, वह आश्रम है। मनुष्य का श्रम चार प्रकार का है- अध्ययनात्मक, सर्जनात्मक, तपस्यात्मक और योगात्मक।

(भारतस्य सांस्कृतिक निधिः रामजी उपाध्याय पृ. ४५)

ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्यार्थी पढ़ता है, अपना ध्यान पुस्तक, भोजन, वस्त्र, शारीरिक उन्नति तथा योग्यता प्राप्त करने तक केन्द्रित रखता है।

गृहस्थाश्रम में अर्थोपार्जन के लिए श्रम करता है। माता-पिता, पत्नी, संतानों एवं परिवार के सदस्यों की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखता है।

वानप्रस्थाश्रम में तपस्यात्मक श्रम करना पड़ता है। हम अपने परिवार, बच्चों तक ही सिमट कर न रह जाएँ। गाँव के लोगों के परिवारों को अपना बनाने का विकास करना।

संन्यासाश्रम की अवस्था में योग की साधना के लिए श्रम किया जाता है। उस समय उसकी सारी ऐषणायें (पुत्रेषणा, वितैषणा एवं लोकैषणा) समाप्त हो चुकी होती हैं। संन्यासी की भावना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की हो जाती है। आश्रम-व्यवस्था के अन्तर्गत ही मनुष्य तीन ऋणों-पितृऋण, देवऋण और ऋषिऋण से उऋण होकर समग्र सुखों की प्राप्ति करता है। ब्रह्मचर्याश्रम में आचार्यों से विद्या प्राप्त करके शिष्य ऋषियों का ऋणी हो जाता है। समावर्त्तन संस्कार के समय गुरु दक्षिणा देकर व निरन्तर स्वाध्याय करने एवं समाज में ज्ञान का प्रकाश करने की प्रतिज्ञा कर वह इस ऋण से मुक्त होता है। गृहस्थ में माता-पिता की सेवा करके तथा राष्ट्र को सुशिक्षित, संस्कारित एवं सुयोग्य संतानें प्रदान कर वह पितृऋण से मुक्त होता है। वानप्रस्थ में स्वाध्याय, तपस्यादि में संलग्न रहकर छात्रों को विद्याध्ययन कराके और परोपकार के कार्य करके वह देवऋण से मुक्त होता है। संन्यास आश्रम तीनों ऋणों से मुक्ति का आश्रम है।

मनुष्य जीवन के चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) हैं। चारों पुरुषार्थों का भी चार आश्रमों से सम्बन्ध है। आश्रमों के माध्यम से इन्हें प्राप्त किया जा सकता है। ब्रह्मचर्य आश्रम में मनुष्य, धर्म के तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करता है। गृहस्थ आश्रम में मुख्य रूप से अर्थ और काम की प्राप्ति होती है। वानप्रस्थ, धर्म की साधना का आश्रम है और संन्यास आश्रम में मोक्ष की साधना होती है। मनुष्य का चरम उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति है तथा चार आश्रम इस लक्ष्य की चार सीढ़ियाँ हैं। इन पर चढ़कर मनुष्य मोक्ष प्राप्त करने में सफल होता है।

चतुष्पदी हि निःश्रेणी ब्रह्मण्येषा प्रतिष्ठिता।
एता मारुह्य निः श्रेणी ब्रह्म लोके महीयते।।

- महाभारत शान्तिपर्व २४२-१५

स्वामी दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वेदविषय-विचारः के अन्तर्गत लिखते हैं- 'ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम के सत्याचरणरूप जो कर्म हैं, वे भी ईश्वर की प्राप्ति के लिए हैं।' महर्षि दयानन्द लिखते हैं- 'जिसमें अत्यन्त परिश्रम करके उत्तम गुणों का ग्रहण और श्रेष्ठ काम किये जायें उनको आश्रम कहते हैं।' (आर्योद्देश्यरत्नमाला)

कौटिल्य ने त्रयी विद्या के अन्तर्गत आश्रम व्यवस्था की महत्ता को स्वीकार करते हुए लिखा है- 'त्रयी में निरूपित यह धर्म, चारों वर्णों और चारों आश्रमों को अपने-अपने धर्म कर्त्तव्य में स्थिर रखने के कारण लोक का बहुत ही उपकारक है।'

एष त्रयी धर्मश्चतुर्णावर्णानामांश्रमाणां च स्व धर्मस्थापना दौप कारिकः। (कौ.अ. १/३)

पवित्र आर्य मर्यादा में अवस्थित, वर्णाश्रम धर्म में नियमित और वैदिक धर्म से रक्षित प्रजा दुःखी नहीं होती, सदा सुखी रहती है। (कौ.अ. १/३)

महर्षि मनु ने आश्रम-व्यवस्था में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास, इन चारों आश्रमों का पृथक्-पृथक् विधान किया है।

प्राचीन ऋषियों ने जिस वैज्ञानिक आश्रम व्यवस्था का विकास किया था, उसी का पुनः जीर्णोद्धार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास से लेकर पंचम समुल्लास में किया है। महर्षि ने इसे भली-भाँति समझ लिया था कि बिना आश्रम-व्यवस्था के समाज के सभी व्यक्तियों और वर्गों को समान रूप से समग्र विकास के अवसर प्राप्त नहीं हो सकते। एक निश्चित अवधि पर वानप्रस्थ एवं संन्यासाश्रम ग्रहण करने से पद एवं धन का लोभ-लालच अधिक प्रबल नहीं हो पाता और न ही समाज में वर्ग संघर्ष एवं वैमनस्य के अवसर आ पाते हैं। समाज में पवित्र सात्त्विक विचारों के उदय होने से सभी लोग सुखों की अनुभूति करते हैं।

वस्तुतः प्राचीन ऋषियों को अभीष्ट था कि यह जीवन मात्र भोगों में लिप्त न रहे अर्थात् भोगों से, चाह से, कामनाओं से ऊपर उठे। प्रेय मार्ग से श्रेय मार्ग की ओर, प्रवृत्ति मार्ग से निवृत्ति मार्ग की ओर, स्वार्थ से परार्थ की ओर, सकाम भावना से निष्काम भावना की ओर, भोग से त्याग की ओर, अपवर्ग की ओर बढ़ने के लिए ही 'वर्णाश्रम व्यवस्था' की आधारशिला रखी गई है।

आश्रम व्यवस्था इस जन्म के संस्कारों के निर्माण एवं व्यक्तिगत तथा सामाजिक क्रियाओं के नियोजन का प्रयत्न है। आश्रम व्यवस्था प्राचीन भारतीय चिन्तन के अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा की प्रतीक है। वस्तुतः जीवन की वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए, कर्त्तव्य और अध्यात्म के आधार पर मानव जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रमों में विभाजित किया गया। मनुष्य जीवन को पूर्ण रूपेण पुरुषार्थ के सिद्धान्त पर चलाने की वास्तविक अभिव्यक्ति आश्रम व्यवस्था में निहित है।

संपादक- अशोक आर्य

छत्रपति शिवाजी

वीरता की हर दास्तां
शिवाजी के बगैर अधूरी है
भारत की बुलंदी और आजादी में
उनका जिक्र जरूरी है
बहादुरी और आत्मसम्मान की वो
बेहतरीन मिसाल बने
उनकी गाथा गायी लक्ष्मीबाई ने भी
कि देशभक्ति की ना मशाल थमे
बचपन से ही युद्ध में कुशल और
नेतृत्व क्षमता भी बेशुमार थी
माँ जीजाबाई से सीखी उन्होंने बहादुरी
और उनमें अंत:प्रेरणा बेशुमार थी
पिता शाहजी ने उन्हें
हमेशा ही जीतना सिखाया था
हर देशवासी की रक्षा करना
उन्हें उनका उद्देश्य बताया था
यूँ तो मराठे थे वो पर
उन्हें ऐसी शहादत सिखायी थी
महाराष्ट्र के साथ सारे देश में
उनकी वीरता की बहार छायी थी
वीरता की गाथा रच गई
मुग़लों को जो बहादुरी बता गया
ऐसे शूरवीर को शत-शत नमन
मातृभूमि पर जो मर मिट गया।

-साभार- अन्तर्जाल

Dollar
ULTRA
PREMIUM
THERMALWEAR
Share
winter
warmth
▪ LIGHTWEIGHT PREMIUM QUALITY FABRIC
▪ AMINO SILICON SOFTNESS ▪ BODY HUGGING,
COMFIT TAGS ▪ MOISTURE MANAGEMENT &
WICKABILITY ▪ PROTECTING THE WEARER
FROM THE COLD

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 February-2015 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

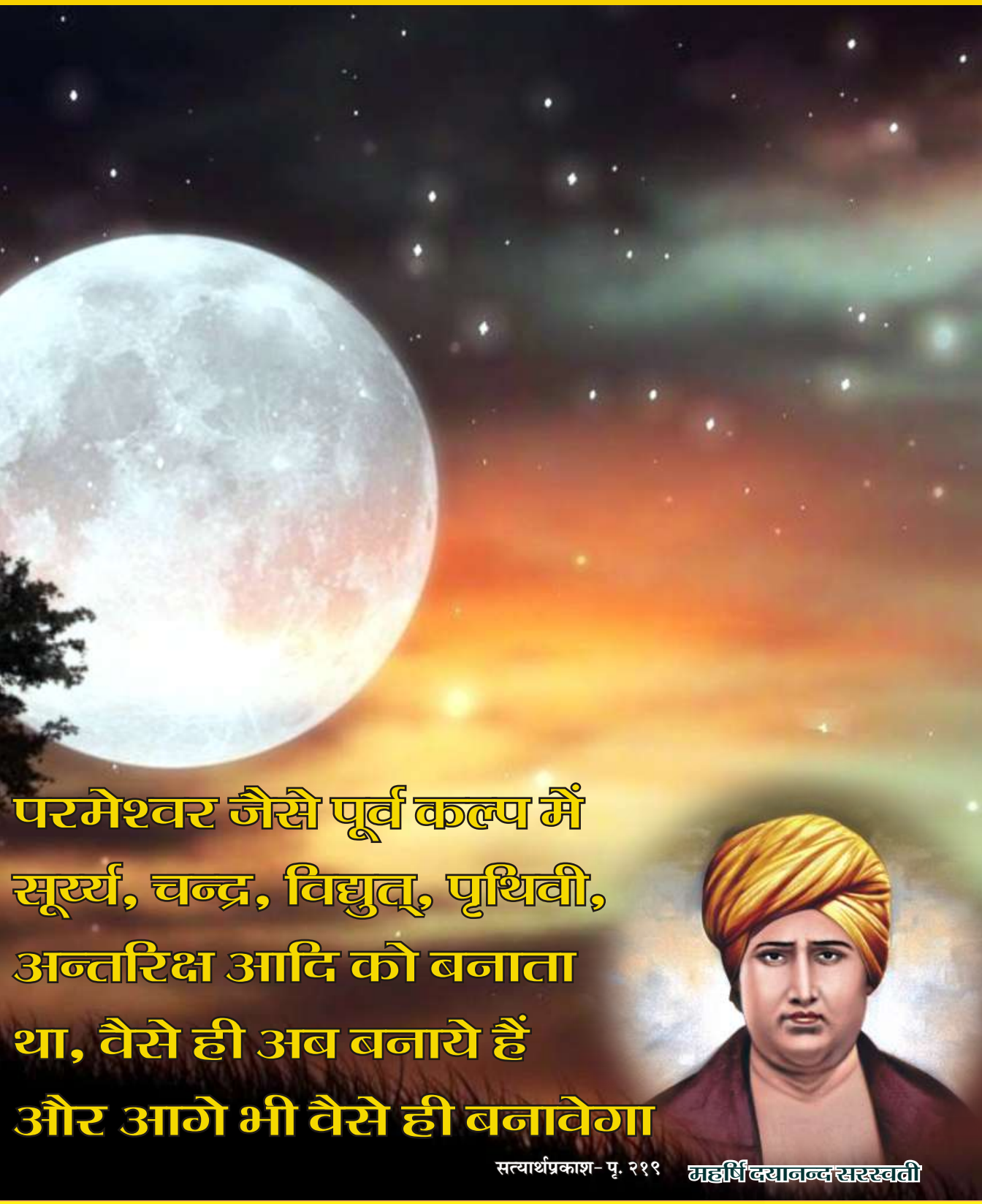

परमेश्वर जैसे पूर्व कल्प में सूर्य्य, चन्द्र, विद्युत्, पृथिवी, अन्तरिक्ष आदि को बनाता था, वैसे ही अब बनाये हैं और आगे भी वैसे ही बनावेगा

सत्यार्थप्रकाश- पृ. २१९

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य